दू पटरीक बीच

..

दू पटरीक बीच

(मैथिली कविता-संग्रह)

रामकृष्ण परार्थी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-81-945722-9-9

दू पटरीक बीच
(मैथिली कविता-संग्रह)

© रामकृष्ण परार्थी

प्रथम संस्करण : 2020
मूल्य : 150 रु.

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Doo Patarik Beech
A Collection Of Maithili Poems By **Ramkrishna Pararthi**
First Edition : 2020, Price : Rs 150/-

पिता स्व. पशुपति पासवान कें समर्पित
बाबूजी, एखनधरि जे किछु छी से अहाँक प्रेरणा सँ छी...

..

कविता-क्रम

9 : मानवता खोजि रहल छी हम
10 : क्रांति-गीत लिखब आसान नहि छैक
11 : हम मजूर छी भाइ
13 : मैथिली बाजू ने
14 : सौहार्द्रक गीत
15 : विरोध
17 : रेलपथ आ हमर कविता
19 : हम जीतय चाहैत छी
21 : भाइ, जागह ने
22 : ओ साहसक स्वरूप छलीह
25 : पहाड़
27 : हमरा खुलिक' लिख' दिय
28 : प्रेमक गीत
30 : भूखलक मर्यादा
32 : नहि चलत हुजूर
34 : मानवताक प्रचार करू
35 : की अछि जिनगी
37 : हमर सोच
38 : लड़ब हमर स्वभाव अछि मीत
40 : विदाइ गीत
41 : भगवानक आवाहन
43 : अहिंसा
45 : गाम आ राजनीति
46 : मंजिल दिस बढ़ब हम
47 : लेखकक धर्म निभेबे करब
48 : गूढ़ प्रश्न
50 : बात सचुक्का
51 : लिखब हमर हिस्सक अछि

53 : आब लोक विकासे खायत
56 : माय
58 : मानवताक साथ चलू
59 : लिखय चाहैत छी महाग्रंथ
61 : लेखकक मोन नहि मानैत अछि
62 : जँ सत्त बात बाजब त' नहि बाँचब
63 : बाउ रे
65 : जागीरक बाध
67 : हमर नेनपन
69 : मनुक्ख छी हम
70 : जन्मभूमि अहाँकेँ शत-शत प्रणाम
71 : संत्रासक कथा
79 : हम आ हमर धर्म
81 : जीबैत जा रहल छी
82 : हमरा गामक बूढ़-पुरनिआ पंच
84 : हम छी दलित साहित्यकार
86 : जनता नहि जानि रहल छैक
88 : ओकरा नहि छैक ज्ञान
89 : मनुक्खता
92 : रे मन, होइत छें कियैक उदास
94 : विकास
95 : हम की लिखू
97 : मुक्तिबोधक ब्रह्मराक्षस
98 : जग भरिमे अछि त्राहिमाम् मचल
99 : लॉकडाउन
101 : अन्हारसँ डर नहि लगैत अछि
102 : तों बेजोड़ छें रौ बौआ
103 : जिनगीक उद्देश्य

मानवता खोजि रहल छी हम

एहि आदमीक भीड़मे, सभक चेहरा पढ़ि रहल छी हम
भुला गेल अछि मानवता, मानवता खोजि रहल छी हम

कतय ने कतय भुला गेल, सद्भावना-सौहार्दक गप्प
आब कहाँ कतहु रहल आदमीमे सम्वेदनाक असरि

अगाध प्रेम आ भाइचाराकेँ लिख' चाहि रहल छी हम
भुला गेल अछि मानवता, मानवता खोजि रहल छी हम

आब कहाँ रहल ओ जमाना, संग आ सहयोग बला
आब जे दोस्ती होइत अछि, निज स्वार्थक उपयोग बला

होबय सभ कियो उपकारी, यैह सोचि रहल छी हम
भुला गेल अछि मानवता, मानवता खोजि रहल छी हम

हम चाहैत छी लोकक, एक-दोसरापर खूबे विश्वास
सभ कियो मिलि-जुलि करी, अपन देशक विकास

सभ तरहक भेद-भावकेँ, मिटाबय चाहि रहल छी हम
भुला गेल अछि मानवता, मानवता खोजि रहल छी हम।

•

क्रांति-गीत लिखब आसान नहि छैक

क्रांति-गीत लिखब असान नहि छैक भाइ
बलिदान क्रांतिक अनिवार्य शर्त्त थिक
एहिमे पुरस्कार-सम्मानक लोभ व्यर्थ छैक
अहाँकेँ निर्भीक भ' क' लिखय पड़त
सत्ता आ समाजक खुशामद छोड़य पड़त
जान तरहत्थीपर राखि लड़य पड़त
विचारधाराक लड़ाइ
तखनहि लीखि सकैत छी अहाँ
क्रांति-गीत भाइ

क्रांति-गीत लिखबाक लेल
विचारमे पाँखि लगाबय पड़त
सड़ल-गलल व्यवस्था बदलय लेल
शब्दक मशाल जराबय पड़त
अहाँकेँ नव सोचक हथौड़ीसँ फोड़य पड़त
जे विकासक पहियामे अड़कन लगौने अछि
ओहि रुढ़ि-अन्धविश्वासकेँ
प्रगतिशील बनि छोड़य पड़त
जे अदौ कालसँ चलि आबि रहल छैक
ओहि जर्जर रीति-रिवाजकेँ

सच पूछी त' क्रांतिक गीत लिखबाक लेल
अहाँकेँ बनय पड़त एकदमसँ बताह
लोक-समाजसँ भिन्नहि मति राखिकेँ
अहाँ रचि सकैत छी नव इतिहास।

•

हम मजूर छी भाइ

हम मजूर छी भाइ
खून-पसेनासँ कमाइ खाइबला
मजूरी अछि हमर धर्म
परिश्रमे अछि हमर पूजा
हमरा नहि चाही एशोआराम
आ कि भौतिक सुख-सुविधाबला सामान
हमरा चाही त' बस दू जूनक रोटी
भोर आ साँझ

हमरा लड़य दिय जठराग्नि मिझयबाक लेल अपन लड़ाइ
एहि लड़ाइसँ हैत हमर-अहाँक आ देशक भलाइ
हमरा नहि ओझराउ अंधराष्ट्रवादमे
आ कि धार्मिक उन्मादमे
हम देश-धर्मसँ ऊपर उठिक'
मानवताक संग रहय चाहैत छी
विश्व-समुदायमे

ई बड़का-बड़का महल
हमहीं बनौने छी भाइ
ई सुन्दर-सुन्दर शहर आ नगर
हमहीं बसौने छी भाइ
ई अहाँक भौतिक सुख-सुविधाबला वस्तु
सभ हमरे बनाओल अछि
खाक' फुलौने छी जे टमाटर सन गाल
ओ अन्न हमरे उपजाओल अछि
हम निर्माता छी।
हमरा विध्वंस नहि सिखाउ भाइ

हम हाथ जोड़ैत छी अहाँकेँ
अहाँ अपन सत्ता-षडयंत्रमे
हमरा नहि फँसाउ भाइ।

•

मैथिली बाजू ने

यौ भाइ, मैथिली बाजू ने, अपनो मातृभाषा अछि
बाभनेकेँ नहि, माय मिथिला अपनो माता अछि
एहि तेरे को-मेरे को बजलासँ सम्मान नहि मिलत समाजमे
अहाँ मैथिल छी, मैथिलीमे बतियाउ गाम-घरमे
जँ अंग्रेजी बजैत छी त' गामसँ बाहरे बाजू
देशी मुर्गी विलायती भाषाकेँ उपमा नहि लगाबू
अपन माय आ मातृभाषाकेँ आदर करू भाइ
मैथिली बड़ मिठगर भाषा छैक
बाजिकेँ देखियौ, नहि होयत झगड़ा लड़ाइ
भाइ, अहाँ मिथिलाकेँ छी, एहि बातक गर्व करू
अपन सभक इतिहास समृद्ध अछि
मैथिल कहि परिचय देबामे नहि हरज करू।

•

सौहार्द्रक गीत

आउ मीत, हम-अहाँ मिलिक' एक गीत लिखी
अहाँ लिखू अल्ला हू अकबर
हम रामजीकेँ रीत लिखी
आउ मीत, हम-अहाँ मिलिक' एक गीत लिखी

गीतक विषय होइक सद्भावना आ शान्ति केर
लोककेँ सन्देश जाइक भैयारीबला क्रान्ति केर
रस्म-रिवाज अपन-अपन मुदा एक प्रीत लिखी
आउ मीत, हम-अहाँ मिलिक' एक गीत लिखी

गीतमे होइक मीत दंडवत, सलाम
मन्दिरक पूजा, मस्जिदक अजान
मन्दिरक कीर्त्तन सुफियाना संगीत लिखी
आउ मीत, हम-अहाँ मिलिक' एक गीत लिखी

गीतमे होइक मीत मिसरी सन बोल
जे ईद आ दीवालीपर क' दैक अनघोल
गीता-कुरानसँ सौहार्द्रक श्रुति लिखी
आउ मीत, हम-अहाँ मिलिक' एक गीत लिखी।

•

विरोध

एकटा साहित्यकार होयबाक नाते
हमर कर्त्तव्य अछि
जे बनी दलित, दमित, शोषित-वंचितक आवाज
एहि धार्मिक असहिष्णुताक समयमे
हमर साहित्यिक धर्म अछि
जे करी मानवताक प्रचार-प्रसार

मुदा, हिंसा!

नहि, कदापि नहि
नहि स्वीकार अछि हमरा
खून-खुनामय
हम लड़य चाहैत छी
विचारधाराक लड़ाइ
ईश्वरचन्द विद्यासागर, राजाराम मोहन राय
आ हुनके सन बहुते रास विद्वान जकाँ
रुढ़िवाद, अन्धविश्वास आ सामाजिक कुरीतिसँ
महात्मा बुद्ध आ गाँधीजी जकाँ
हिंसा-विध्वंसबला रीतिसँ
हम नानक-कबीर जकाँ
सद्भावना-सौहार्द्रक गीत गाबय चाहैत छी
हम महावीर स्वामी जकाँ
अहिंसाक रीति निभाबय चाहैत छी

विरोध त' हमर अवश्य होयत
अदौ कालसँ होइत रहलए
हमरा एहन विचारक आ व्यवहारक लोककेँ

आ होइत रहतैक
प्रतिक्रियावादी आर प्रगतिशीलक मध्य जंग
पुरातनपंथी आ पुनर्जागरणवादीक बीच द्वन्द्व
जेना भेल रहय बुद्ध-नानक आ कबीरक संग
मुंशी प्रेमचन्द आ बाबा नागार्जुनक
विरोध नहि भेल रहनि की

विरोध त' कर्त्तव्यपरायणक पहिचान होइत छैक
अकर्मण्य लोक त' मुर्दाक समान होइत छैक
आइ किछु-किछु हमरो विरोध होइत अछि
जाहिसँ मोन आनन्दसँ विभोर होइत अछि।

•

रेलपथ आ हमर कविता

दिन भरि रेलवे लाइनपर
मेहनति-मजूरी करैत-करैत
थाकि-हारि जाइत अछि मोन
तखन रातिमे थाकल-हारल मोनसँ
कविता लिखैत छी हम
एहना सन स्थितिमे
हमर कविता हास्य-व्यंग्यसँ
भ' जाइत अछि बेरंग
हमरा नहि चाहितो कवितामे
आबिये जाइत अछि
खून-पसेनाक गन्ध

रेलवे लाइनक लोहा आ पाथर संग रहैत-रहैत
हमर हीया भ' गेल अछि पाथर
बुझना जाइत अछि
हमर मोनक कोमल भाव सभ भ' गेल अछि
नीरस आ निस्सन
आब हम नहि लिखि पबैत छी
प्रेम-सिनेहक गीत-गजल
मुदा हमरा सन मजूरक कवितामे
नहि मिलत छल प्रपंच

रेलक दुनू पटरीक बीच बान्हल स्लीपर जकाँ
बन्हा गेल अछि हमर जिनगी
एक दिस रेलक पथ त'
दोसर दिस हमर कविता
हमरा जिनगीमे अछि एहि दुनूकेँ महत्वपूर्ण हिस्सा

एगो हमर रोजी-रोटी त’
दोसर अछि हमर जीबाक इच्छा

रेलगाड़ीक सवारी आ हमर कवितामे
अछि मारिते रास समानता
दुनू बोझाइन आ उबिआयब
दुनूमे गतिकेँ संग-संग ठहरायब
मुदा दुनूक उद्देश्य लक्ष्य धरि पहुँचायब
रेलगाड़ीकेँ गंतव्य स्थान धरि त’
हमर कविताकेँ जिनगीक ठेकान धरि।

•

हम जीतय चाहैत छी

हम जीतय चाहैत छी मीत
लड़िक' नहि
झगड़िक' नहि
जोर-जबर्दस्तीसँ नहि
बाँहि-बलक सख्तीसँ नहि
दुलारिक'
पुचकारिक'
सेवा आ भक्तिसँ
निहोरा आ मिनतीसँ
लोकक हृदय

हृदय जीतिक'
मनबाव' चाहैत छी अपन गप्प
गप्प तकरारबला नहि
प्यारबला
सद्भावना-सौहार्द्रबला
प्रेम-सिनेहक प्रचारबला
खूब नीक व्यवहारबला

हम लाबय चाहैत छी मीत
एगो क्रान्ति
एगो सुन्नर बदलाव
जाहिमे घृणा-विद्वेषक कोनो स्थान नहि
कियो हिन्दू, कियो मुसलमान नहि
हम जाति-पातिबला भेदभाव मिटाबय चाहैत छी
सभ धर्मक लोककेँ हम भाइ-भाइ बनाब' चाहैत छी।

हम चाहैत छी मीत
बस एकहि टा धर्म
आ एकहि टा ईश्वर
हम सगर संसारमे
मानवताक धर्म फैलाबय चाहैत छी
हम समरस शान्ति केर बसात बहाबय चाहैत छी।

•

भाइ, जागह ने

हौ, सुतलाहा लोक सभ जागह ने
मिथिला आन्दोलनमे हाथ बटाबह ने
एना कियैक सुतल छह स्वार्थक चद्दरि तानि
अपनो जागह, दोसरोकेँ जगाबह ने

मायक भाषाक उत्थान तोरो काम छह भाइ
अपन माटि-पानिक कर्ज चुकाबह ने
किछु गोटे निकलल छथिन मिथिलाक झंडा टाँगि
आबिक' हुनक संग संख्या बढ़ाबह ने

हे आब बाभन-सोलकनक राजनीति बन्द करह ने
पाग आ मंचक संस्कृति थोड़े कम करह ने
मिथिला-मैथिल कहि पओने छह सम्मान बहुते
आब मैथिलीकेँ पढ़ौनीमे सम्मिलित कराबह ने।

•

ओ साहसक स्वरूप छलीह

(उन्नाव काण्ड)

बेटी, अहाँक साधारण मृत्यु नहि अछि
अहाँ लड़िक' मरलहुँ अछि
अहाँ शहीद छी
समाजक नजरिमे आततायी व्यभिचारीसँ
लड़निहारि बेटी विरांगना होइत छैक
हे विरांगना
हम अहाँकेँ नमन, वन्दन, अभिनन्दन करैत छी।

अहाँ नहि हारलहुँ अछि
हारलहुँ अछि हमसभ
हारल अछि एहि देशक
एक सय तीस करोड़ जनता
एहि देशक कानून
एहि ठामक संविधान
हारल अछि सत्यमेव जयतेक सिद्धान्त
जीतल अछि
दुराचारी, आततायी, महाशैतान
सत्ताक नपुंसक सन्तान

बेटी, अहाँ मरि त' ओही दिन गेल रही
जाहि दिन अतैया अपन एँड़ीसँ
अहाँक मान मर्दन कयने रहय
अहाँ जरि त' ओही दिन गेल रही
जाहि दिन अहाँ आत्मदाहक किलोल कयने रही
अहाँकेँ मरि जयबाक चाही छल
ओहि दिन जाहि दिन

सत्ताक षडयंत्र आ भ्रष्ट तंत्र मिलिक'
अहाँक पिताकेँ मृत्यु शय्यापर सुतौने रहय

मुदा हे विरांगना
जानि नहि अहाँ कोन माटि-पानिसँ बनल छलहुँ
जे जरि-मरिक' लड़ैत रहलहुँ
जाधरि शरीरमे जान रहल
जाधरि घटमे प्राण रहल
अहाँ साहसक स्वरूप छलहुँ
हिम्मतिक प्रतिरूप छलहुँ

हम कोना कही जे
भगवान अहाँक आत्माकेँ शान्ति देथि
जखन कि हम बुझि रहल छी
अहाँक आत्मा छटपटाइत रहत
हीया कछमछाइत रहत
सदियो-सदियो धरि
अहाँ अशान्त आ फिरिसान रहब
न्यायक आसमे
अपन मृत्युकेँ बदलाक विश्वासमे

मुदा निरर्थक
निरर्थक होयत अहाँक आस आ विश्वास
आब ई संसार पुरुषार्थसँ हीन अछि
राम आ अर्जुनसँ विहीन अछि
आब नहि कियो
सीताकेँ बचबय लेल धनुष-वाण उठाओत
आब नहि कियो
द्रौपदीक लाजक बदला लेल
गाण्डीव उठायत

अहाँ निभरोस भ’ जाउ
आ जाक’
निर्भया-आसिफाकेँ कातमे सुति जाउ

एहिठाम रावण आ कंसक शासन छैक
रंगलाहा सियार सभ एकर प्रशासन छैक
एतय बेटी बचाउ, बेटी पढ़ाउक’ नारा गढ़ि
बेटीक बलात्कारीकेँ आश्रय देल जाइत छैक
नारीक सम्मानमे हमसभ छी मैदानमे कहि
नारीक सम्मानकेँ लूटल जाइत छैक

अहाँ प्रतीक्षा करू
एहि घृणित व्यवस्थासँ
क्रम नहि टूटत
किछुए दिनक बाद
कोनो ने कोनो निर्भया
अहाँक कातमे जाक’
अबस्से सुतत!

•

पहाड़

हमरा रेलवे आवासक सामने
ठाढ़ अछि एगो विशाल पहाड़
नित्तह भोरे केबाड़ी खोलिते
दर्शन भ' जाइत अछि
आ हम सोचय लगैत छी
एकर उदारताकेँ
एकर सहिष्णुताकेँ
मनुक्ख अदौ कालसँ करैत आयल अछि
एकर दोहन
पशु-पक्षीकेँ दैत रहल अछि ई
आश्रय आ भोजन
अपना खोहमे
कतेको कुकर्म देखने
सामन्ती सभ्यताक जुर्म देखने
एखनो अछि
शान्त, मौन, अविचल, स्थिर
ने कोनो विरोध
ने कोनो प्रतिरोध
ने दुखसँ हताश
ने सुखक अहसास
आह! कतेक उपकारी
कतेक धैर्यवान
आ कतेक विशाल हृदय

हृदय!
मुदा पाथर ने
ई खियाल अबिते

घृणासँ नजरि घुमा लैत छी
मुह-नाक बिजुका लैत छी
हमरा नहि बनबाक अछि
पहाड़ जकाँ पाषाण आ निष्प्राण
हम ठीक छी साधारणे इंसान।

•

हमरा खुलिक' लिख' दिय

हम चाहि रहल छी भाइ, गरीबक अधिकार लिखी
जे धधकि रहल छैक, जठराग्नि संग लड़ाइमे
हमर स्वभाव नहि अछि जे अहाँक खुशामद करी
हम त' हिस्सा लेबय चाहैत छी
एहि वर्गकेँ अधिकारक लड़ाइमे

अहाँकेँ त' लगबे करत जे लिखब हमर कड़ुगर छैक
मुदा एखनो शोणित बहि रहल छैक एकर फाटल बेमायसँ
अपने त' यौ भाइ साहब, भाग्य ल' क' जन्म लेलहुँ
जाक' कहियो ओकरहुसँ मिलियौ
जे मरि रहल छैक अभावे दबाइमे

अपनेक महलमे भाइजी, उत्सवक माहौल अछि
ओतय बुधना बेचारा मरि रहल छैक भूखसँ तन्हाइमे
मन्दिर-मस्जिद, धर्म-मजहब ई सभ अपनेक मुद्दा अछि
रोटीक मुद्दाबलाकेँ नहि ओझरबियौ अपन चतुराइमे

अन्धराष्ट्रवादक भावना भाइसाहब अपनेकेँ शुभकामना अछि
हमरा खुलिक' लिख' दिय
दलित, दमित, शोषित-वंचितक भलाइमे।

•

प्रेमक गीत

प्रेमक गीत लिखी मीत हम
शान्ति-अहिंसा फैलायब यौ
घृणा नहि अछि हमर हृदयमे
जे बैरीक भाओ भड़कायब यौ

हमर सोच अछि इंसानक बीच
धर्मक नहि दीवार कोनो
नहि कियो हिन्दू, नहि कियो मुस्लिम
नहि जाति-पातिक विचार कोनो
हम सभ संतान छी एकहि ईश्वरक
यैह गीत सुनायब यौ
घृणा नहि अछि हमरा हृदयमे
जे बैरीक भाओ भड़कायब यौ

इतिहासक नहि बात करी हम
औरंगजेब आ कि मनुस्मृति
हम आजुक नवका पीढ़ी छी
हम जानी बस सद्भावक रीति
हम सौहार्द्रक गीत लिखी मीत
भैयारीक मान बढ़ायब यौ
घृणा नहि अछि हमरा हृदयमे
जे बैरीक भाओ भड़कायब यौ

हम छी मीत अहिंसाक पुजारी
सभ जीवात्मामे ईश्वर देखैत छी
जप-तप, पूजा-पाठसँ बेसी
जीवक सेवामे निष्ठा रखैत छी

मानवता अछि हमर धर्म
हम शोणित नहि बहायब यौ
घृणा नहि अछि हमरा हृदयमे
जे बैरीक भाओ भड़कायब यौ।

•

भूखलक मर्यादा

मान-अपमान, उचित-अनुचित
पाप-पुण्य, देश-धर्म
किछु नहि
किछु ने देखाइत अछि हमरा
जखन देखैत छी
भूखसँ बिलखैत अपन बाल-बुतरूक मुह
उपासे परिवारक सुखायल ठोर
तखन की न्याय आ कि अन्याय
एकदमसँ बताह भ' जाइत छी
हमरा किछु नहि रहैत अछि बोध

मानलहुँ
छल-प्रपंच, झूठ सभ पाप छैक
चोरी-डकैती, लूट-खसोट महापाप छैक
मुदा धनीकक लेल
जकरा भरल छैक पेट
जकरा बखारीमे छैक अन्नक ढेरी
जकरा तिजोरीमे छैक
हीरा-मोती-जवाहरात आ रुपया गाँजल
भूखल पेट कि धर्म आ कि नैतिकता बुझी हम अभागल

हम गरीब छी, यैह दोष अछि हमर
शोषित-वंचित, अभिशप्त
तखन मारि-गारि, अपमान-अनादरसँ
कहाँ कोनो पड़ैत अछि फरक
जेना बुझना जाइत अछि
दिनचर्या भ' गेल अछि हमर

ई सभ सहबाक
हम भ' गेल छी अभ्यस्त

हमहुँ चाहैत छी मान-सम्मान
समाजक नजरिमे उचित स्थान
हमरो लग मानवीय भावना आ सम्वेदना अछि
हमरो अपन जोगाओल किछु सपना अछि
हमरो अपन चालि-चरित्र नीक रखबाक कामना अछि
कुकर्म आ कुकर्मीसँ घृणा अछि

मुदा ई सभ सोच भ' जाइत अछि बेकार
जखन दरिद्रता सुरसा जकाँ मुह बओने
हमर सभ सुन्नर कल्पित भावना आ सपनाकेँ
बना लैत अछि अपन आहार

तखन नहि चाहितो
टुटि जाइत अछि हमर सभ मर्यादा
मजबूरी भ' जाइत अछि स्वार्थ लिप्सा
हमरा बुझना जाइत अछि
सभ तरहक पाप
सभ तरहक कुकर्म हमरा लेल अछि क्षम्य
कियैक त' हमर आत्मा कहय लगैत अछि हमरासँ
भूखल लेल रोटीसँ पैघ नहि कोनो मर्यादा
नहि कोनो नैतिकता
आ नहि छैक कोनो धर्म!

•

नहि चलत हुजूर

ई सत्ताक अहंकार नहि चलत हुजूर
ई फासिस्टबला विचार नहि चलत हुजूर
बुद्ध आ गाँधीक देशमे
अहाँ विरोधीकेँ हिंसासँ दबबैत छी
अपनहि बच्चा सभक देहपर
अहाँ लाठी बरसबैत छी
एहिठाम सभ धर्मक लोक
रंग-बिरंगक भेष-भाषा
विचारोमे भिन्नता छैक
बस अहाँक एकवर्णा विचारसँ
ई देश नहि चलत हुजूर

एहि देशमे भगत सिंह
ईश्वरक अस्तित्वकेँ नकारि देने रहथिन
संविधान रचयिता बाबा भीम राव अम्बेदकर
अपन धर्मकेँ परित्यागि देने रहथिन
ई देश चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल
बिरसा मुण्डा आ अश्फाकउल्ला खान सन योद्धोक थिक
गोड्सेक सिद्धान्तसँ ई देश नहि चलत हुजूर

सच कही त' अहाँ
सरकारक कर्त्तव्यकेँ भुलि गेल छी हुजूर
अपन पार्टीक प्रचारमे
एकदमसँ डूबि गेल छी हुजूर
देश छैक त' पार्टी
ई खियाल रखियौक अपने
पार्टीक परिधि तोड़िकेँ बाहर निकलियौ अपने

शासकक कर्त्तव्य
देशक समृद्धि, शान्ति आ सद्भावना छैक
जाति-पाति, धर्म-मजहब त'
शासक लेल संकीर्ण भावना छैक
एहि संकीर्ण भावनासँ देश नहि चलत हुजूर

देश चलबय लेल अहाँकेँ करय पड़त
सभ धर्म आ सभ तरहक विचारक आदर
राखय पड़त स्वतंत्र आ निष्पक्ष विचार
तखनहि चला सकैत छी हुजूर
खूब नीकसँ अपन सरकार।

•

मानवताक प्रचार करू

ईर्ष्या-द्वेष, घृणा-उन्मादक सभ कियो प्रतिकार करू
मानव बनिक' अयलहुँ अछि त' मानवताक प्रचार करू

हम छी मानव, अहाँ छी मानव त' ई धर्म स्वीकार करू
ईश्वर अबस्से प्रसन्न रहता, कर्मसँ सदाचार रहू

मानवताकेँ अपन दायित्व बुझि सद्भावनाक विस्तार करू
जाति-धर्मसँ ऊपर उठिक' समाजक अहाँ उद्धार करू

सत्य-अहिंसा, क्षमा-दयाक सगरे अहाँ प्रसार करू
गरीब-निस्सहायक मदति क' अपन हीयामे उद्गार भरू

मानव ईश्वरक उत्कृष्ट रचना थिक, हुनक रचनाक सम्मान करू
खून-खुनामे, दंगा-फसादसँ नहि मानवताकेँ नुकसान करू

सभ धर्मक सार एकहि अछि, सद्भावनाक खियाल राखू
नहि धर्मक हफीम पीबिक' ईश्वरक नाम बदनाम करू।

•

की अछि जिनगी

की अछि जिनगी
दुख आ कि सुख
खुशी आ कि गम
आइ धरि नहि बुझलियै हम
मुदा जीबैत रहलहुँ

किछु पबैक आसमे
किछु बनबाक विश्वासमे
सुख-दुखक मझधारमे
बहैत रहलहुँ
मुदा जीबैत रहलहुँ

सम्मान-अपमानक द्वन्द्वमे
नित जिनगीक प्रतियोगितामे
सदिखन संघर्ष करैत रहलहुँ
मुदा जीबैत रहलहुँ

कहियो बड़-बेमारीसँ बेहाल जिनगी
कहियो बाल-बच्चा, परिवारसँ खुशहाल जिनगी
कहियो ललितगर त' कहियो फटेहाल जिनगी
जिनगीक सभ रंगसँ
हम सजैत रहलहुँ
मुदा जीबैत रहलहुँ

शान्ति अशान्तिक मध्य चलैत जिनगी
समस्या सुझावसँ लड़ैत जिनगी
जिनगीक सभ अनुभवकेँ

हम लिखैत रहलहुँ
मुदा जीबैत रहलहुँ

जिनगीक अनुरागमे
प्रेम-सिनेहक तलाशमे
घृणा-विद्वेषक बहिष्कारमे
सदिखन मानवताक पथ चलैत रहलहुँ
मुदा जीबैत रहलहुँ

चलबे जिनगी थिक
आ ठहरब मृत्यु
परिश्रमे जिनगी थिक
आ आलस मृत्यु
हम जीतय लेल सदिखन
लड़ैत रहलहुँ
मुदा जीबैत रहलहुँ।

•

हमर सोच

यौ मीत हमर सोच अछि
एगो बड़का बदलाव होइ
आर किछु होय नहि होइ
सभक हीयामे आगि होइ

आगि होइ जे नहि मिझाय
बाढ़ि आ कि बिहाड़िसँ
जन-मजूर-किसान चलय
अपन छाती तानिकेँ

अन्याय-अत्याचार देखि
शोणित किनको नहि सूखय
शोषण-प्रताड़नाकेँ
कियो चुपचाप नहि सहय

अपन-अपन अधिकारक
सभकेँ ज्ञान होइ
स्वाभिमान होइ एहन
कि मुर्दामे जान होइ।

जान होइ कि लड़ि पड़य ओ
भ्रष्ट आ बेइमानसँ
अपन हिस्सा खाइबला
हरेक ओहि इंसानसँ।

•

लड़ब हमर स्वभाव अछि मीत

लड़ब हमर स्वभाव अछि मीत
अपन हक आ अधिकारक लेल
अपन स्वतंत्र विचारक लेल
जनमिते बान्हि देल गेल हमरा
नीच जाति कहि अनेक बन्धनमे
सामाजिक-आर्थिक आ धार्मिक रस्सीसँ
जकर असह्य पीड़ा आ प्रबल वेदनासँ
हम छटपटा रहल छी
एहि रस्सीकेँ तोड़बाक लेल
हम कछमछा रहल छी
हम निर्बन्ध होबय चाहैत छी मीत
हम स्वतंत्र होबय चाहैत छी

बचपनसँ आइ धरि हम लड़िते अयलहुँ
कहियो गरीबीसँ त' कहियो बदनसीबीसँ
कहियो भुखमरीसँ त' कहियो बेमारीसँ
आइ धरि चैन नहि मिलल हमरा
जिनगीमे एकहु पल
बोनिहारक बेटा भ' क' अयलहुँ
एहि धरतीपर
गरीबी बुझू त' भगवानसँ सौगातेमे मिलल हमरा
धर्म आ समाजक ठिकेदारसँ
प्रताड़ना बुझू त' अभिशापमे मिलल हमरा

सच्च पूछी त' भगवानक देलहा
किछु नहि अछि हमरा लग
सओख-सेहन्ता जरि गेल हमर

जिनगी भरि रहलहुँ लल्ल
मुदा मानवक उत्कृष्ट गुण स्वाभिमान
कूटि-कूटिक' भरल अछि हमरामे
जे हमरा सम्हारने अछि
यैह हमर सामरथ आ शक्ति अछि
यैह हमर सम्बल आ अभिव्यक्ति अछि
आ यैह हमर बढ़बैत अछि आत्मविश्वास
दैत अछि लड़बाकक साहस
अन्धविश्वासी-रुढ़िवादी बला रीतिसँ
अन्याय-अत्याचारक जंजीरसँ
हम ढाहय चाहैत छी सभ भेदभावक देबाल
हम मेटाबय चाहैत छी नृशंस सभ्यता
आ जघन्य संस्कृति बला विचार।

हम लड़य चाहैत छी मीत
हम लड़य चाहैत छी
हारि हुअए आ कि जीत, मीत
हम संघर्षरत रहय चाहैत छी
दुनिया किछु सोचय, किछु समझय
हम लड़िये क' मरय चाहैत छी मीत
हम लड़िये क' मरय चाहैत छी।

•

विदाइ गीत

हम अहाँक दुलारी धिया मायक परछाइ
दुनिया के रीत पापा, बेटी छैक पराइ
यौ पापाजी करू ने विदाइ

नैहरसँ ल' जाइत छी हम, बचपनक याद यौ
अहाँक संस्कार पापा, मायक व्यवहार यौ
छोड़ि गाम-समाज अपन, छोड़ि अपन माइ
यौ पापाजी करू ने विदाइ

एना ने कानू पापा, फाटय अछि करेज यौ
हम परदेशी धिया, जाइत छी अपन देश यौ
पाबनि-तिहारमे पापा, भेजायब छोट भाइ
यौ पापाजी करू ने विदाइ

अपन खियाल राखब, मायपर देब ध्यान यौ
माय-बापपर रहैत छैक बेटीकेँ नैहरपर गुमान यौ
कनिको मोन पिड़ायत पापा, करायब अपन दवाइ
यौ पापाजी करू ने विदाइ

हाथ जोड़ि पापा अहाँकेँ मिनती करैत छी
अबैत रहब हमरासँ मिल', जाइत-जाइत कहैत छी
सासुरमे करायब पापा, अपना कुलकेँ बड़ाइ
यौ पापाजी करू ने विदाइ।

•

भगवानक आवाहन

हे भगवान आबिक' देखियौ
अहाँ देखियौ अपन निर्माण
अहाँक बनाओल सुन्नर रचनाकेँ
तोड़ि रहल इन्सान
हे भगवान आबिक' देखियौ
अहाँ देखियौ अपन निर्माण

अहाँक सभसँ सुन्दर कृति
मानवक अवधारणा अछि
मुदा आइ त' मानवे भगवन
मानवता केर लेल विडम्बना अछि
अहींकेँ उत्पातक नारामे गढ़ि
सभ क' रहल बदनाम
हे भगवान आबिक' देखियौ
अहाँ देखियौ अपन निर्माण

स्वार्थ-लिप्सा, झूठ-प्रवंचना
नहि कनेको सेवाक भावना
सभकियो अछि धर्ममे आन्हर
नहि क्षमा-दया, नहि सद्भावना
जाति-पाति आ धर्म-मजहबमे
लड़ि रहल इन्सान
हे भगवान आबिक' देखियौ
अहाँ देखियौ अपन निर्माण

ई जग ठीके आन्हर भगवन
नहि किनको सम्वेदना छैक

अल्लाह, ईश्वर, गॉड प्रभुजी
सभ एकहि परमात्माक
परिकल्पना छैक
ई गप्प हम लोककेँ कोना बुझबियै
हम छी बड़ फिरिसान
हे भगवान आबिक' देखियौ
अहाँ देखियौ अपन निर्माण

एक बेर आबू अहाँ धरतीपर
सृष्टिकेँ बचबियौ यौ
नफरत-घृणा, विध्वंस, उन्मादसँ
मानवकेँ मुक्ति दिलबियौ यौ
सभ धर्मकेँ एक बनाक'
मानवताकेँ दियौ आत्मज्ञान
हे भगवान आबिक' देखियौ
अहाँ देखियौ अपन निर्माण।

•

अहिंसा

हम नहि देखि सकैत छी हिंसा
जाति-सम्प्रदाय आ राष्ट्रक नामपर
के मारत? ककरा मारत?
ककरो भाइ मरत, ककरो साँइ मरत
ककरो बेटा मरत, कियो स्वयं मरत
शोणित बहत
शरीर छटपटायत
आत्मा दुखायत
आत्मा! जाहिमे परमात्माक
वास होइत छनि
ई हमरे कहब नहि अछि
ऋषि-मुनि-विद्वतजन
सेहो कहैत छथि
हम मन, वचन, कर्मसँ
जीवात्माकेँ नहि दुखाबय चाहैत छी
अहिंसापर चलैत सदिखन
सर्वशक्तिमान परमात्माक
आगाँ माथ झुकाबय चाहैत छी

हम मानव छी
हमर उद्देश्य शान्ति आ सद्भावना अछि
क्षमा-दया-प्रेम आ उपकारक भावना अछि
हमरा लग अहिंसक विचारसँ भरल
मानवीय सम्वेदना अछि
हम दानवक स्वभाव हिंसाकेँ
नहि बेसाहय चाहैत छी
हम घृणा-विद्वेष, विध्वंससँ

एहि पृथ्वीकेँ बचाबय चाहैत छी

मारब-काटब त' किन्नहु स्वीकार नहि अछि हमरा
बड़कासँ बड़का समस्याक समाधान
अहिंसा क' सकैत अछि
ई दृढ़ विश्वास अछि हमरा
इतिहास साक्षी अछि
हिंसक लोक सभदिन अपन
स्वार्थ-सिद्धि कयलक अछि
सत्ता आ सुन्दरीक लेल
शोणितक धार बहौलक अछि
मुदा अहिंसक लोक त' सदति
सत्ता-सुन्दरीसँ दूर रहि
जगतक कल्याण कयलक अछि
लोककेँ विश्वबन्धुत्वक पाठ पढ़ौलक अछि।

मुदा कियो ई भ्रम नहि पालथु
कि अहिंसक लोक पुरुषार्थसँ हीन होइत छैक
हमरा जनतबसँ अहिंसाक मार्ग
बड़ कठिन होइत छैक
हिंसा त' दुर्बलक हथियार छैक
महापुरुष लोकनिक सदति अहिंसक विचार होइत छैक
हमहुँ जीवन पर्यन्त अहिंसाक धर्म
निभाबय चाहैत छी
हम बुद्ध आ गाँधी देशक रहनिहार
लोककेँ युद्धसँ बचाबय चाहैत छी।

•

गाम आ राजनीति

गाम सुन्नर छल हमर, आब एतेक विरान कियैक
गामक लोककेँ आब नेता सन इमान कियैक
किनसाइत राजनीतिक दुर्गन्धिसँ महकि गेल अछि
हमर सौंसे गाम
समाजमे रहतैक फेर सद्‌भावनाक स्थान कियैक

हम सभ अपने छी त' ई नफरतक दीवार कियैक
घर हमरो एतय अछि, हम अनचिन्हार कियैक
हमर संगी-साथी सभ करय लगलाह राजनीति
भैयारीक खोजमे फेर हम छी फिरिसान कियैक

दोष जनताक अछि, बदनाम सरकार कियैक
अहाँ चुनलहुँ नेता एहन छवि दागदार कियैक
ई हमर गाम अछि संसदक मकान नहि
फेर गिरल गामक लोककेँ एतेक इमान कियैक?

•

मंजिल दिस बढ़ब हम

जाधरि साँस अछि
आस नहि छोड़ब हम
हम बटोही छी कर्त्तव्य पथक
डेगे-डेग अपना मंजिल दिस बढ़ब हम

हमरा कोनो विघ्न-बाधा
नहि रोकि सकैत अछि रस्ता
कियैक त'
हमरा बुझल अछि मंजिलक रस्ता
हम जिद्दपर अड़ल छी
संघर्ष करब हम
डेगे-डेग अपन मंजिल दिस बढ़ब हम

हम नहि रहैत छी दोसराक आसमे
हम एक-एक डेग बढ़बैत छी
अपन आत्मविश्वासमे
अपन सामरथ भरि प्रयासरत रहब हम
डेगे-डेग अपना मंजिल दिस बढ़ब हम

किनको छिटकीसँ हम नहि गीड़ि सकैत छी
कियैक त' हम हवामे नहि
जमीन पकड़िक' चलैत छी
बिनु लक्ष्य सधने नहि प्रतियोगिताकेँ छोड़ब हम
डेगे-डेग अपना मंजिल दिस बढ़ब हम

कठिन परिश्रम त' हमर हिस्सक अछि
जीतक स्वादक हमरा चस्सक अछि
एहि हिस्सक आ चस्सककेँ
उमरि भरि नहि छोड़ब हम
डेगे-डेग अपना मंजिल दिस बढ़ब हम। •

लेखकक धर्म निभेबे करब

हम अपन लेखकक धर्म निभेबे करब
सत्तापर अँगुरी उठेबे करब
जेल देथि आ कि फँसरी झुलबथि
हुनक गलतीपर कलम चलेबे करब
हम अपन लेखक धर्म निभेबे करब

ओ विकास-विकास अनघोल करथि
मुदा हम गरीब भारतक आइना हुनका देखेबे करब
हम चापलूस आ कि चाटुकार नहि
कवि-कथाकार छी
हम अपन साहित्यिक धर्म निभेबे करब
हम सत्तापर अँगुरी उठेबे करब

सत्तामे रहैक चाहे कोनो पार्टी
हम अपन विरोधी रुखि अपनेबे करब
ओ कतबो नीक करताह तैयो
हम आर नीक करय लेल हुनका उकसेबे करब
हम अपन लेखकक धर्म निभेबे करब।

•

गूढ़ प्रश्न

एगो गूढ़ प्रश्न अछि हमरा लग
हम बदलि गेलहुँ आ कि
हमर गाम-समाज बदलि गेल
हमर नजरिया बदलि गेल आ कि
समाजक गतिविधिये बदलि गेल
हमरा समाजमे रहबाक तौर-तरीका
आ भेष-भाषा बदलि गेल आ कि
समाजक परिभाषा बदलि गेल
मुदा बदलि त' अबस्स गेल अछि
किछु ने किछु

मानैत छी गाम-समाजक विकास भेल अछि
मटियारी सड़कपर पीसीसी ढला गेल अछि
फूसक घर टूटिक' ईंटाक महल बनि गेल अछि
पोखरि-इनार भासिक'
अँगने-अँगने चापाकल धँसि गेल अछि
मुदा कुटी बला पोखरिमे आब
कहाँ कोनो बच्चा हरे-हरे खेलाइत अछि
पाखरिक चबूतरापर बैसिक'
आब कहाँ कियो दुख-सुख बतियाइत अछि

एहि अन्ध विकासक बसातमे
हमरा गामक भैयारी बदलि गेल
सामाजिक सद्भावना, सौहार्द्र, प्रेम, सिनेहबला
सभ रिश्तेदारी बदलि गेल

आब ने फागुनमे

टोले-टोले लोक फगुआ गबैत अछि
आ ने दस आदमी एक जगह बैसिक'
कतहु रानी सारंगा आ शीत बसंतक खिस्सा सुनैत अछि
आब दशमीमे डिगडिगिया नहि पड़ैत अछि हमरा गाममे
आब जट-जटिन आ झिझिया नहि खेलाइत अछि हमरा गाममे
आब मन्दिर परहक झूलामे भीड़ नहि जुटैत अछि
आब पूजा-पाठमे भोजपुरी अश्लील गीत बजैत अछि
चिक्का-कबड्डी, गुल्ली-डंटा बदलि गेल
हमरा गामक सभ्यता-संस्कृति बदलि गेल

एक त' गाममे लोक नहि अछि
दोसर जे अछियो त' अपने आपहिँ मगन
सभक सोच छनि
हम थोड़बे छी दोसरासँ कम
आब पाँच गो बूढ़ समाजमे
पंचैती नहि करैत छथि
आब लोक पाइक बलपर
कोर्टमे केस-फौदारी लड़ैत अछि

मानलहुँ परिवर्त्तन प्रकृतिक नियम होइत छैक
सभ्यता-संस्कृतिमे बदलाव कालक्रमक संग होइत छैक
मुदा सामाजिक सद्भावना-सौहार्द्रकेँ बलि द' क'
सखी-बहिनपा आ भैयारीबला संस्कृतिक कुचलिक'
जँ होइत अछि विकास
त' की प्रगतिशील लोक सभकेँ छनि स्वीकार?

•

बात सचुक्का

भाइ, अहाँ हमरा संगे आउ
हमर दुख-तकलीफ-अपमानकेँ
हमर छलनी भेल स्वाभिमानकेँ
अहाँ हमरा हीयामे उतरिक'
अपन हीयासँ अहसास करू
तखनहिँ दलितक उत्थानक बात करू

हमर युग-युगक दुख-दर्द, संतापकेँ
खाली कल्पनासँ नहि देखि सकैत छी
हम अदौ कालसँ जे भोगि रहल छी
ओहि अभिशापकेँ
अहाँ अनुमान लगाक' नहि समझि सकैत छी
हमर दुखायल भावना
आ छटपटायत सम्वेदना जनबाक लेल
अहाँकेँ अपन जातिक दम्भकेँ छोड़य पड़त
हमरा नीकसँ पहिचानय लेल
अहाँकेँ धर्म आ संस्कृतिक परिधि तोड़य पड़त
हमर हालचाल बुझबाक लेल
अहाँकेँ मान-सम्मान सेहो छोड़य पड़त
हमरासँ मित्रवत व्यवहार लेल
अहाँकेँ सामाजिक गिट्ठह खोलय पड़त

भाइ, अहाँकेँ मानय पड़त
जे धर्मसँ पैघ होइत छैक मानवता
तखनहिँ लिखि सकैत छी अहाँ
दलितक उत्थानक बात सचुक्का।

•

लिखब हमर हिस्सक अछि

हम की सोचू आ की लिखू
बड़ दुविधामे पड़ल छी हम
हमरा के पढ़त आ के गूनत
एहि अन्तर्द्वन्द्वमे फँसल छी हम

मुदा गरीब-गुरबाक हक अधिकार लिखब
त' हमर हिस्सक अछि
हिस्सक एहेन कि
नहि लिखब त' जीविते मरि जायब हम
नहि सोचब त' बताह बनि जायब हम

जाधरि हमरा हाथमे शक्ति अछि
कलम नहि छोड़य चाहैत छी
जाधरि हमरा घटमे प्राण अछि
हम मुर्दा नहि बनय चाहैत छी
हम आखर-आखर चुनि
नव क्रान्तिक गीत गढ़य चाहैत छी
हम एकसँ एक प्रेरक गप लिखि
सुतलाहा लोकसभकेँ जगाब' चाहैत छी

कियो पढ़त आ कि नहि पढ़त
कियो सुनत आ कि नहि सुनत
ई हुनकर सभक खगता छनि
हम लिखब रूढ़ि, अन्धविश्वासक विरोधमे
हम लिखब अन्यायी-अत्याचारी सभक प्रतिरोधमे
ई हमर बेगरता अछि

पुरस्कार आ सम्मानक लोभ नहि अछि हमरा
सत्ता आ प्रशासनक डर नहि अछि हमरा
हम लिखैत छी आत्माक सन्तुष्टि लेल
हम लिखैत छी मोनक तृप्ति लेल
हम निर्भीक भ'
आम आदमीक आवाज लिखय चाहैत छी
हम अन्यायक विरोधमे
इनकिलाब लिख' चाहैत छी।

•

आब लोक विकासे खायत

बड़ सुन्नर आ मनोरम जगहमे अछि
हमर रेलवे आवास
दू टा पहाड़क बीच
चारू दिस हरियर-हरियर गाछ-पात
लाल-पीयर पलाश आ गुलमोहरक फूल
बिन बसन्तो सुनैत रहैत छी कोइलीक कूक
प्रकृतिसँ सजाओल जगहमे अछि
हमर रेलवे आवास

आवासक आगाँमे अछि
बर आ पीपरक दू टा गाछ
एहि दुनू गाछक मध्य अछि
भोला बाबाक एगो चबूतरा
चबूतराक समीप फुलायल अछि
अड़हुल आ कनैलक फूल
बड़ रमणगर आ शान्त वातावरण
कविक कल्पना आ साधनाक लेल
ई अछि एगो उत्कृष्ट उपवन

फुरसतिक पलमे
एहि चबूतरापर बैसैत छी हम
नव-नव कविता लिखबाक लेल
नीकसँ नीक शब्द गुनैत छी हम
स्टेशनक नाम रमना अछि
जिला गढ़वा, झारखण्ड
आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र अछि
एकर सभक संस्कृतिमे

बजैत रहैत अछि ढोलक-झालि-मृदंग
एहि चबूतरापर बैसलाक उपरान्त
कविताक विषयकेँ कमी नहि रहैत अछि
अदौ कालसँ शोषित-पीड़ित एहि लोकक मनोवृत्ति
हमरा कविताक विषय बनैत अछि

आदिवासी, कोरबा, खरबार, उराँव
सभकेँ छैक अपन माटि-पानि
जंगल-झाड़-पहाड़सँ खूब लगाव
बुझू जे प्रकृतिकेँ अपन जमा-पूँजी
बुझैत अछि ई सभ
जंगल काटि, पाथर-पहाड़ तोड़ि
अपन बुत्ता जुटबैत अछि ई सभ
तैयो रखने अछि
प्रकृति आ पर्यावरणमे नीक सन्तुलन
कियैक त' एकरा सभकेँ बुझल छैक
जे प्रकृति आ पर्यावरणमे असन्तुलनसँ हैत
हमर सभक जीवनचक्र भंग

मुदा अन्धविकासक नामपर
आब एकर सभक जमा-पूँजीकेँ
लूटयमे लागल अछि सरकार
कल-कारखानाक नामपर
एकर माटि-पानिकेँ
बलात् छीनयमे लागल अछि पूँजीवाद
अदौ कालसँ लड़ाकू प्रवृत्तिक
एहि जनजातिक आवाजकेँ आब
बन्दूकक डरसँ दबा देल जाइत छैक
कानूनक भय देखाक'

एकरा अपनहिँ घरसँ भगा देल जाइत छैक
आ ई मेहनतिया सोझमतिया
अपन बाल-बुतरू, परिवारक संग
बौआ रहल अछि
एहि शहरसँ ओहि शहर
प्रकृति संग रहनिहारकेँ
गुजारा कोना हेतैक कृत्रिम नगरमे

हमरा जनतबे आदिवासी समाजकेँ
घरसँ बाहर केनाइ एगो भयंकर प्रदूषण अछि
प्रकृतिक नियमक उल्लंघन अछि ई
ई उल्लंघन धीरे-धीरे
मनुक्खक अस्तित्व लेल विनाश लाओत
बचल-खुचल जंगल कटि जायत
पहाड़ टूटि जायत
त' निश्चिते जल-स्तर सेहो घटि जायत
प्रकृति आर पर्यावरणक सन्तुलन बिगड़ि जायत
रौदी-अकालसँ सभ जीव-जन्तु त्रस्त भ' जायत
फेर लोक विकास खायत
विकास चिबाओत
आ विकासेसँ अपन प्यास मिझाओत
ई अन्धविकास एक दिन अबस्से
समग्र सृष्टिकेँ लेने-देने
कालक ग्रास भ' जायत!

•

माय

माय हमर वात्सल्यताक मूर्त्ति
आशीर्वादक भण्डार छथि
मोन करैत अछि
लिखिक' करितहुँ मायक ममताक बड़ाइ
मुदा शब्दे नहि फुराइत अछि

माय हमर भगवान अछि
हिनकर चरण हमरा लेल चारू धाम अछि
हिनक हाथ माथपर पड़िते हम
भ' जाइत छी नेहाल
मोन गदगद भ' जाइत अछि
जँ माय कहैत अछि
बौआ रखियह अपन खियाल

मायक विषयमे लिखब
सत्ते मुश्किल काम छैक
मायक ममताकेँ शब्दक सीमामे बन्हनाइ
कोनो कवि-कथाकारक लेल असान नहि छैक
मायक कर्जा कोनो बेटा नहि उतारि सकैत अछि
माय लक्ष्मी-दुर्गा-सरस्वती थिक
हिनकर सेवासँ वंचित भ' कोनो बेटा
अपनाकेँ उद्धार नहि क' सकैत अछि

आइ मायसँ दूर रहिक'
बचपन मोन पड़ैत अछि
ठोरपर हँसी आ आँखिसँ नोरो बहैत अछि
एक दिन इसकुल जाय लेल

खेहारने रहय माय
एगो करची ल' क' बैर गाछ तक
पहुँचेने रहथि डेन पकड़िक' इसकुल
सिखौने रहथि
बौआ पढ़ि-लिखिक' आदमी बनू

आय मायक सीख संस्कार मानिक'
हम पाबि रहल छी मान-सम्मान
हम अपन जननी संग क' रहल छियनि
सभ मातृशक्तिकेँ प्रणाम।

•

मानवताक साथ चलू

भाइ, हमर गप अहाँ मानी वा नहि मानी
अहाँ स्वतंत्र छी
मुदा कहबाक अछि एतबे जे
आब हमहुँ नहि परतंत्र छी
आब अहाँ ऊँच-नीचक बात छोड़ि दिय
हमहीं हाथ बढ़बैत छी पहिने
प्रेमसँ भैयारी जोड़ि लिय

हमर बनाओल ढकियामे
छठि अहाँ मनबैत छी
हमर भुइयाँ बाबा, सलहेस बाबाकेँ
अहूँ गोहरबैत छी
अहूँकेँ पाबनिमे हम उत्सव मनबैत छी
त' फेर हमर दुख-व्यथाक गपपर
अहाँ कियैक खिसियाइत छी

हे भाइ, लड़ब त' लड़ाइ पैघ चलत
अपन सभक लड़ाइमे
माय मिथिलाक बड़ाइ घटि चलत
हमर-अहाँक एकहि धर्म आ एकहि भाषा अछि
अपना सभक माय मिथिले माता छथि
तेँ जाति-पाति छोड़ि
मानवताक साथ चलू
सभ गोटे मिलि-जुलिक'
माय मिथिलाक विकास करू।

•

लिखय चाहैत छी महाग्रंथ

एहि हल्ला-गुल्लासँ बड़ी दूर
बड़ी दूर जाक'
शान्तिसँ बिताबय चाहैत छी
अपन जिनगी

गाछ-वृक्ष तर
फुजल आकाशक छत
जतय शान्ति पसरल होइक चारूभर
ओहिठाम
ओहिठाम हम अपन ठेकान बनबय चाहैत छी

ईर्ष्या-द्वेष, काहि-कलहसँ दूर
पशु-पक्षीक संग
जंगल-झाड़-पहाड़मे
हम साँस लेबय चाहैत छी
प्रकृतिक शुद्ध बसातमे

परंच एकर माने ई नहि
जे हम सांसारिक संतापसँ हारि मानिक'
परमात्माकेँ खोजय लेल निकलय चाहैत छी
सत्त कही त' हम
अपन साहित्य-साधनाक बलसँ
एहि संसारकेँ किछु देब' लेल निकल' चाहैत छी

हम एकान्तमे जाक'
रचय चाहैत छी एगो महाग्रंथ
जाहिमे छल-प्रपंच, स्वार्थ-लिप्साक

कोनो स्थान नहि
अल्लाह, ईश्वर, गॉड, प्रभुजी सभक
सेहो कोनो बखान नहि
बस, मानवताकेँ प्रभासित करैत
प्रेम, सिनेह, सद्भावना आ शान्ति
जे हिंसा आ घृणासँ
एहि मानवक सभ्यताकेँ
सदति रक्षा करैत रहतैक
नहि होब' देतै कहियो
विध्वंसबला क्रान्ति!

•

लेखकक मोन नहि मानैत अछि

ने हम हास्य-व्यंग्य लिखि पबैत छी
ने शृंगार-रस हम गबैत छी
मुदा लिखब हमर हिस्सक अछि
हम जखने कलम उठबैत छी
भूख-व्यथा देखा जाइत अछि तखने
हमरा बुझना जाइत अछि जे ई थिक अपराध
नहि चाहितो लिखा जाइत अछि इनकिलाब

हम चाहैत छी गुणगान करी
सत्ताक हमहुँ सम्मान करी
एहि भीड़क संगे जय श्रीराम कही
मनुक्खकेँ हिन्दू-मुसलमान कही
किछु धर्मक हमहुँ उन्माद लिखी
किछु हमहुँ अन्धराष्ट्रवाद लिखी
मुदा लेखक मोन नहि मानैत अछि
सत्ताक षडयंत्र थिक सभटा से जनैत छी।

•

जँ सत्त बात बाजब त’ नहि बाँचब

जँ सत्त बात बाजब त’ नहि बाँचब
अन्धशक्ति स्वीकारू तखनहिँ जान बाँचत
ई विद्वानक सरकार छैक
तर्क-वितर्क कयलापर खूब डाँटत
जँ सत्त बाजब त’ नहि बाँचब

पिंजरामे बन्न छी, बन्हले रहू
जँ पाँखि फड़फड़ायब त’ पाँखि काटत
बड़ दम्भी सरकार छैक
विरोध जहाँ केलियै त’ जहलमे ठाँसत
जँ सत्त बात बाजब त’ नहि बाँचब

जेना चलि रहल छैक, चलए दियौ
परिवर्त्तनक गपपर ई गरदनि काटत
पूर्ण बहुमतक सरकार छैक
ठोर सीने रहू तखने जान बाँचत
जँ सत्त बात बाजब त’ नहि बाँचब।

•

बाउ रे

बाउ रे जिनगीक रस्ता बड़ मोस्किल छैक
डेग-डेगपर अपनाकेँ सम्हारि रखिहेँ
काँट-फूल दुनू मिलतहु रस्तामे
फूल चुनि, काँट बहारि चलिहेँ
प्रेम-सिनेहकेँ हीयामे संजोगिहेँ
काहि-कलहकेँ बिसारि चलिहेँ
बाउ रे...

अपना भरि ने ककरो दुखबिहेँ
निज स्वार्थक भावकेँ त्यागि रखिहेँ
सत्त-न्यायकेँ सदिखन बौआ
अपन आदर्श बनाक' रखिहेँ
लोकक बहिन-बेटीकेँ अपन बहिन बुझिहेँ
नारीक सम्मानमे माथ झुकौने रखिहेँ
बाउ रे...

मेहनतिसँ सभकिछु सम्भव छैक बौआ
ई आत्मविश्वास बनाक' रखिहेँ
लक्ष्यपर अपन नजरि टिकौने
कर्त्तव्यपरायणक भाव मोनमे जगौने रखिहेँ
दुख-सुख जिनगीमे अबिते छैक बौआ
सफल भेलोपर पएर जमौने रखिहेँ
बाउ रे...

'अहिंसा परमो धर्मः' छैक बौआ
जीवक सेवामे निष्ठा बनौने रखिहेँ
जाति-धर्मसँ ऊपर उठि बेटा

मनुखताक भाव हीयामे जगौने रखिहेँ
एहि बातकेँ हमर सीख-सिद्धान्त मानि
जिनगीक रस्तापर सदति बढ़ैत रहिहेँ
बाउ रे...।

•

जागीरक बाध

आइ अचानक यादि आबि रहल अछि
जागीरक बाध
बहुत रास स्मृति चलचित्र जकाँ
मानस पटलपर घुमि रहल अछि
लागि रहल अछि जेना स्वर्गीय बाबूजीकेँ
हर जोतैत बर्खक बाद आइ एकबेर फेरसँ
दर्शन भ' रहल अछि

आइसँ तीस बरिस पहिने
हम ओहि बाधमे हरक लागनि
पहिल बेर पकड़ने रही
बाबूजीकेँ सिखओलापर
खेत जोतब सिखने रही

मुदा ओहि अतीतक स्मृतिकेँ
आब नहि अछि कोनो साक्ष्य
नहि रहला बाबूजी
नहि रहल ओ कैला आ गोला बरदक जोड़ा
नहि रहल ओ हर आ पालो
नहि रहल ओ जागीर बाधक तीन कठबा खेत
बाबूजी बेचि देने रहथिन
अपना जीबैतेमे
हमरा सभक भरय लेल पेट
आ आब हमहुँ नहि रहलहुँ किसान

आब अछि त' बस
एगो सुन्नर अतीत

एगो सुखद अहसास
जाहिसँ परदेसमे रहितहुँ
कहियो काल घुमि अबैत छी
हम अपना गामक जागीर बला बाध।

•

हमर नेनपन

नेनपनक सभ बात यादि अछि हमरा
मायक प्यार, बापक दुलार
दादीक लेल रहैत रही जेना हमहीं संसार
अभावक जिनगी फूसक घर-द्वार
भरि बरसात चुबैत रहैत छल छप्पर-चिनबार
ई सभ हमर कल्पना नहि, यथार्थ अछि
दुख-तकलीफसँ भरल
हमर नेनपनक इतिहास अछि
माय सूखल जगह ताकि
एक दिस सुता दैत छलीह
हमरा सभ भाइ-बहिनकेँ
आ हमरा सभक सिरहनामे बैसि
बितबैत छलीह बरखाक राति

नेनपनक दुखक अनुभूतिसँ
वर्त्तमान अपार आनन्दसँ भरि जाइत अछि
ओ पोआरक बिछौना, गोनरिक ओढ़ना यादि क'
रजाइयोमे कँपकँपी जेना बुझना जाइत अछि

आइयो यादि अबैत अछि
मायक हाथक बथुआ साग
भोरे-भोरे खा लैत रही
हरियरका मेरचाइ संगे बसिया साग-भात
आ दुआरिये-दुआरिये घूर ताप' लेल बौआइत रही
जाड़े थरथराइत

सभ किछु यादि अछि हमरा
गिरहथक दलान, दलानक आगाँमे

ओ बड़का खरिहान
जाहिमे बाबूजी ओसबैत रहैत छलाह
गिरहथक धान
आ हम भरि दिन पेटकान लधने
रहैत रही गिरहथक ओहिठाम
बाबूजीक संगे नीक-निकुत करय लेल जलपान

किछु नहि बिसरलहुँ अछि
ने अपन गाम, ने अपन टोल
आ ने गाम-समाजक बूढ़-पुरनिआ लोक
ने नेनपनक संगी-साथी
ने बाँसक खपलोइया बला दीयाबाती
ने धार परहक छठि
आ ने पिउसी संगे गेल रही जे मेला उच्चैठ

एकताराक इन्द्र पूजाक मेला एखनो यादि अछि हमरा
एखनो यादि अछि हमरा अपना गामक कुटी परहक झूला
यादि अछि हमरा गाम बला सरकारी इसकुलमे
हमर अपन कयल सभ किरदानी
सिलेट-पिनसिल इसकुलमे छोड़ि भागि जाइत रही
कहियो गोली खेलय, कहियो उँइख चोरबय
त' कहियो केराओ-मटर तोड़य
ठीके उकठ-पुकठसँ भरल अछि हमरो नेनपनक कहानी
कहानी जे एखनो हँसा दैत अछि
त' किछु दुख-व्यथाक बात एखनो कना दैत अछि
मुदा जानि नहि ओ दुख भरल नेनपनमे
एहन कोन सुखद अनुभूति छलैक
जे हमर सुखद वर्त्तमानसँ
बेसी आह्लाद क' रहल अछि
हमर भूतकालिक आख्यान!

•

मनुक्ख छी हम

नित नव-नव सृजनक ब्योंतमे
लागल रहैत छी हम
सदिखन मनुष्यताक नीकसँ नीक
परिभाषा गढ़य चाहैत छी हम
हम के छी
जे अपन सामर्थ्यसँ बेसी रचय चाहैत छी
हम के छी
जे अपना भरि सभक हीयामे
मनुष्यताक भाव जगाबय चाहैत छी
जखन कि
हमर नहि अछि कोनो बिसेख मान सम्मान
हमर नहि अछि कतहु मिसिओ भरि नाम
फेर हम कियैक अपसियाँत भेल रहैत छी
जे मनुष्यता स्थापित होइत सभठाम
कि हम बुद्ध त' नहि
नहि, कदापि नहि, ओ त' स्वयं भगवान छलाह
हम नानक, कबीर, महावीर किछु नहि
ओ सभ महान छलाह
त' कि हम विद्वान
नहि, हमरा नहि अछि
एखनो भाषा-व्याकरणक ज्ञान
त' हम के?
यैह प्रश्न हम अपन अन्तर्मनसँ पुछैत छी बेर-बेर
आ कहियो काल हमर अन्तर्मन
हमरासँ कहि दैत अछि
एहि चौरासी लाख जीवक योनिमे
अहाँ मनुक्ख छी
ई की कम अछि! •

जन्मभूमि अहाँकेँ शत-शत प्रणाम

परदेशमे रहितो कल्पनामे घुमि अबैत छी गाम
हमर हीयामे बसल छी अहीं हे मिथिला माँ
अहींक माटि-पानिसँ पोसाक' हम भेल छी जुआन
हे हमर जन्मभूमि अहाँकेँ शत-शत प्रणाम

अहाँसँ दूर रहि बढ़ल अछि अहाँक प्रति सिनेह
स्मृतिमे संजोगने छी नेनपनसँ सियान धरि सभटा नेह
ओ घर-आँगन, ओ बाध-बोन, ओ अपन गाम-समाज
कदापि नहि बिसरि सकैत छी माइ अपन जन्मस्थान
हे हमर जन्मभूमि अहाँकेँ शत-शत प्रणाम

अहाँक सभ संस्कार, विधि-व्यवहार एतहु अपनौने छी
आँगनमे तुलसीचौरा, देबालपर तिलकोर लगौने छी
उगैत सुर्जकेँ अर्घ्य त' दैत छी
डुबितोकेँ करैत छी प्रणाम
लोक जे पुछि दैत अछि कत' अछि गाम
गौरवान्वित भ' कहि दैत छियनि अहींक नाम
हे हमर जन्मभूमि अहाँकेँ शत-शत प्रणाम

मोनमे मनोरथ रहैत अछि
भेटितथि कियो मैथिल भाइ
मैथिलीमे गप-शप क'
करितहुँ अपन संस्कृतिक बड़ाइ
मुदा एतय नहि भेटैत छथि कियो मैथिल
पलायनक दुखसँ कहियो काल
भ' जाइत छी फिरिसान
तखन आँखि बन्न करैत लगबैत छी अहींपर ध्यान
हे हमर जन्मभूमि अहाँकेँ शत-शत प्रणाम।

•

संत्रासक कथा

रामायण-महाभारतक नहि
हम कथा संत्रासक लायल छी
यौ बाबू, हम बुधुआ केर
दुख-व्यथा सुनाब' आयल छी

माय-बापक यादि नहि ओकरा
ठाकुरक महींस चरबैत छल
नून-रोटी जे मिलल
ओ पेट भरिक' पबैत छल
ने वात्सल्यता, ने पुचकार
ने कियो रहैक ओकरा बौंसनिहार
ओ टुगर कि जानय गेल
कथी होइत छैक माय-बापक दुलार
नेनपन ओकर सिमटि गेल छल
गिरहतक चाकरी बजाबयमे
महींसक खेनाइ जुटाबयमे
महींसकेँ धोबय-नहाबयमे
ओ नेनपन कोन नेनपन यौ बाबू
जाहिमे सदिखन लगय लगाम
मारि-गारि, लात-मुक्कासँ
सदिखन होइत छल ओकर अपमान

ई कथा नहि अछि महाभारतक
जाहिमे चलल खूबे धनुष-वाण
ई कथा अछि ओहि सभ बुधुआ केर
जकरा पेटक भूखसँ लड़नाइ अछि काम

मारि-गारि सुनि कहुना पलायल
आब ठकाय लेल भेल सियान
छल-प्रपंचसँ भरल ठाकुर
ओकरा लेल छल गिरहत महान
ओ सोझमतिआ बेचारा कि जानय गेल
कियैक किछु दिनसँ बढ़ल अछि मान
मात्र सात कट्ठा ओकर पुश्तैनी जमीन छल
ताहि लेल ठाकुरक डोलि गेल इमान
हँ यौ बाबू, सत्ते कहैत छी
ठाकुर छल बड़का बइमान
ठकि-फुसलाक' बुधुआसँ
ल' लेलकै औंठाक निशान
दुश्मन बनि कियो चोट करैत छैक
त' देहे टा बथैत छैक
मुदा अपनक आघात यौ बाबू
करेजा केर छलनी करैत छैक

ई कथा नहि अछि महाभारतक
जाहिमे निर्बलक सहाय भेलथिन भगवान
ठकि-फुसियाहीसँ भरल एहि दुनियामे
गरीबक लेल छथिन भगवानो बइमान

गिरहतसँ जँ मोन टूटल त'
चाकरी छोड़ि बनल बोनिहार
एकटा फूसक घर बनाबयमे
मदति कयलक गोटेक चिन्हार
छल मेहनतिया आ सोझमतिया
क' दैत रहैक सभक काम
तेँ गौआँ-घरुआ लोक समझबैक
रौ बुधुआ, आब कनियाँ ल' आन

ताहिमेसँ किछु भलमानुष
ठीक कयलनि ओकर बियाह
भोज-भात लेल करजो देलकै
बरियातियो जयबाक लेल भेल विदाह
बैसाखक महीना, शुक्ल पंचमीक राति
निभाबय आयल बुधनी ओकर जीवनक साथ
अनाथ बेचारा केर साथ मिलल
ओकरा बुधनी भगवानक सौगाति मिलल

ओ राजा राम नहि छल
जे जनकनन्दनीकेँ देने रहथिन बनवास
ओकर दुनूकेँ दामपत्यक
हमहीं गवाही दैत छी साक्षात्

छोट-छीन मड़ैया छल, रहय दुनू परानी
दिन कटैत छल एना, जेना होबए राजा-रानी
दुख-सुख दुनू संग बिताबय
घरमे प्रेमक बसात बहाबय
ने कलह, ने किछुओ विवाद
रहैत छलैक एककेँ दोसरापर विश्वास
जैह दू-चारि सेर बुधुआ कमाइ
कोन-साग दुनू मिलिक' खाइ
एक दिन बुधुआ मजूरीसँ आयल
देखलक बुधनी केर मोन पीड़ायल
पुछलक अहाँ छी कियैक उदास
बुधनी कहलक— अहाँ बनयबला छी बाप
खुशीसँ बुधुआ नाचय लागल
लाजे बुधनी घरमे भागल
ओकर खुशी देखि हमहुँ हर्षाय
मोनसँ देलियै अशेष बधाइ

ई कथा नहि अछि महाभारतक
जाहिमे करौने रहथिन द्रौपदी महासंग्राम
ई कथा अछि ओहि सभ घरनीक
जे दैत अछि दुनियाकेँ प्रेमक पैगाम

भविष्यक सपना बुधुआ जोगाबय
अजनमल पूतकेँ लोकि-लोकि खेलाबय
सिउँथ चूमि बुधनीकेँ करय दुलार
जुनि चिन्ता करू
अहाँक सोइरी घरक
हम सेवा करय लेल रहब तैयार
एही दुलार-मलारमे पुरि गेल बुधनीक प्रसवक समय
आइ साँझेसँ प्रसव पीड़ामे टूटए सौंसे देह
ई हालति देखि दाय-माय बुधुआकेँ समझाबय
एकरा ल' जो मधुबनी
कोनो डागडरसँ देखा दे
हकासल गेल बुधुआ गाड़ीबलाक दुआरि
हाथ जोड़ि कहलक— भैया हमर अछि घर घुरिआयल
अयलहुँ अछि अपने लग गाड़ीक आसमे
कने जल्दीसँ हमर घर चलू
घरनीकेँ ल' जयबाक अछि सरकारी अस्पतालमे
गाड़ीमे बुधनीकेँ ल' क' बैसलि चारि गो दाइ-माइ
प्रसवक पीड़ा जेना निरन्तर बढ़ले जाइक
दाइ-माइ सम्बल बनि बुधनीक हिम्मति बढ़ाबय
ड्राइवरक बगलमे बैठल बुधुआ देव-पितरकेँ गोहराबय

मुदा भाग्यक लेखा केर भैया
हमरा-अहाँकेँ कहाँ अछि भान
पलमे प्रलय होयत आ कि मिलत प्रसन्नता

जिनगीक ई बुझाबलि बुझय छथिन भगवान

अस्पताल पहुँचयमे बाजि गेल एक बजे राति
ड्यूटीमे ओंघाइ छलीह कुर्सीपर दू गो दाइ
हतासल गेल बुधुआ जाक' दाइकेँ जगौलक
दुख-व्यथा अपन हड़बड़ीमे बतौलक
पेट देखि दाइ बजलीह घोर निराशाक गप
—पेटमे बच्चा मरि गेल छैक
सुनिक' बुधनी भेल हतप्रभ
बुधुआकेँ लागय जेना देहपर वज्र खसि पड़ल
जोगायल सुन्नर सपना एहि गपक बिजलीसँ जरि गेल
आर्त्तनाद करैत निहोरा कयलक दाइकेँ—
बच्चा त' मरिये गेल, कहुना बचा लियौक माइकेँ
दाइ छलीह कर्कशा, बजलीह खौंझाक'
डागडर छथिन सूतल, अयथिन राति बिताक'
बड़ धड़फड़ायल छेँ त' प्राइभेटमे जाक' देखा ले
पेट खोलिक' बच्चा निकालतौ रुपया जुटा ले
सुनि बुधुआ सोचय लागल, जान त' जहान छैक
बेचि देब हम स्वयंकेँ
यदि रुपयासँ बचब लिखल एकर प्राण छैक

मुदा किनको मरब आ कि जीयबपर
मनुक्खक अछि कहाँ अख्तियार
विधिक विधान ने कियो टारि सकैछ
लाख खर्चा क' लैक आ कि जतन हजार

अचक्केमे बुधनी खूब जोरसँ चिचियायल
बुझना गेल जेना ओकर प्राण निकलि आयल
अनहोनीक आशंकासँ बुधुआ सिहरि गेल
अचेत भ' थरथराइत जाक' बुधनी लग बैसि गेल

दाइ-माइ बुधनीक हाथ-पएर दबाबै
दर्द दबौने ओ बेचारी बुधुआक मुह निहारै
नोरक धार बहैक दुनूक आँखिसँ
दुनूकेँ कुहेस फाटै मुदा कानय जी जाँतिक'
ई केहन दारुण दुख, हृदयविदारक विदाइ
भगवानोकेँ दया नहि आबै
जेना बनल छथि कसाइ
अनायासे बुधुआमे चेतना आयल
प्राइभेट अस्पताल जाइ लेल उठल धड़फड़ायल
मरणासन्न बुधनी ओकर पकड़ि लेलक हाथ
बैसाय लेलक अपन सिरहनामे
नहुएँ-नहुएँ मूड़ी अपन ध' लेलक ओकर जाँघपर
कहलीह संकेतमे– आब हम जाइत छी मृत्यु धाम

ई कथा नहि अछि महाभारतक
जाहिमे उत्तराक गर्भकेँ बचौलखिन भगवान
यथार्थक दुनियामे इलाजक अभावे
मरि जाइत अछि कतेको
गरीब माइ लेने अपन सन्तान

दाइ-माइक कानबसँ मचि गेल अनघोल
पाथरक बुत बुधुआकेँ नहि चूबए नोर
लोककेँ बुझना गेल जे ओ
दारुण दुखक घटनासँ पस्त अछि
आ कि शोकाकुल भ' त्रस्त अछि
जखन गाड़ीबला झकझोरलक ओकर बाँहि
हँसल ओ एना जेना विक्षिप्त सन बुझायल
दाइ-माइ कहुनाक' लहासकेँ उठौलक
बुधुआकेँ सम्हारि गाड़ीबला गाड़ीमे बैठौलक
लहास आयल गाममे छओ बजे भोरे

लोकक करमान जुटलै बुधुआ केर घरे
बुधुआ लोकसभकेँ हँसिक' आग्रह करै—
अबै जाउ, देखियौ बुधनी जाइत छैक भगवानक घर
दृश्य एतहुका देखिक' पाथरो पिघलि जाइ
हकन्न कानि नोर चुबैत लोक अपन घर जाइ
सभकियो बाजै एकहि गप
—जन्मक अभागल सपनहुँ नहि सुख देखलक

ई कथा नहि अछि द्वापर युगक
जे आबि करथिन भगवान सुदामाक उद्धार
परिस्थितिक मारल हजारो सुदामा घुमि रहल छैक
कहाँ कतहु देखैत छियैक हम कोनो चमत्कार

टोलक लोक क' लेलक अर्थी तैयार
आनिक' धयलक ओहिपर बुधनीक लहास
चारि गोटे मिलिक' अर्थी उठौलक
किछु गोटे सम्हारि बुधुआकेँ कर्त्ता बनौलक
चलि देलीह सोहागिने बुधनी ओहि नगरी
धधरामे जरै ओकर नहुँ-नहुँ शरीर
नहि भेल कोनो क्रिया-करम, नहि सूइ सराध
दुइए दिनक बाद बौरा गेल छलैक बतहा
के करितैक ओकर भोज-भात
ओना मुइलाक बाद देखिते के छैक
खायल खिआक' लोक अपन कर्जा चुकबैत छैक

एहि घटनाक बीतल हैत मात्र तीन सप्ताह
लोक बिसरय लागल छल बुधुआकेँ
कारण छल एगो नबका अफवाह
मुदा नहि जानि कोनाक' भाग्य
ओकर लिखने रहथिन भगवान

आजुक अखबारमे एगो लावारिस लहास देखि
फेर हकन्न कानि रहल अछि सौंसे गाम
छल बच्चा चोरक हल्ला
पसरल सभ गाममे
निर्दोष बतहा मारल गेल अछि, बच्चाक चाहमे

ई कथा नहि अछि धार्मिक
जे करितहुँ हम भगवानक गुणगान
गरीब लोकक दुख-तकलीफ देखि
हमरा नहि अछि विश्वास जे छथिन भगवान!

•

हम आ हमर धर्म

धर्मक डोरासँ बुनल
जातिक आडम्बरक पोशाक
जे अदौ कालसँ
बलात् पहिरा देल गेल अछि हमरा
सत्त कही त'
हमर गत्तर-गत्तरकेँ
खलओदार कयने जा रहल अछि
आब बर्दास्तक सीमासँ बेसी
बुझना जाइत अछि

ई धर्म अछि किंवा प्रपंच
जाहिमे हमर भक्ति, भाव, श्रद्धाकेँ
कनेको नहि अछि महत्व
हमरा छुतहर कहि रहल अछि
हमर अपने धर्मग्रंथ
त' मोन पिड़ाइत अछि
हमर आत्मा दुखाइत अछि

ई समाजक रीत-रेबाज
हमरा समाजमे रहितहु
अछोप कहि जखन
क' दैत अछि समाजसँ एक कात
त' सत्त कही
मनुक्ख रहितहु हमरा मनुक्ख होयबाक
अनुभूतिपर
प्रश्न-चिन्ह लगबैत अछि
ई रूढ़िवादी विश्वास

एतेक पढ़ला-लिखलाक बादो
जखन कियो डोम-दुसाध-चमार कहि
करैत अछि हमर अपमान
तखन बुझना जाइत अछि
खंड-खंड भ' गेल हमर आत्मस्वाभिमान

एतेक सभ्यता-संस्कृति विकासक बादो
जखन सुनैत छी कतहु
मन्दिरमे अछि दलितक प्रवेश निषेध
त' कुण्ठित भ' जाइत अछि
धर्मक प्रति हमर आस्था आ विश्वास
संकुचित बुझना जाइत अछि
सभ्यता-संस्कृतिक विकास
आ व्यथित भ' जाइत छी हम
तखन मोनमे एगो उठैत अछि प्रश्न
की एहने होइत छैक धर्म

के बनौलक एहेन धर्म
जाहिमे भरल अछि खाली षडयंत्र
भगवान...?
नहि, कदापि नहि
हम नहि मानि सकैत छी
जे भगवान करथिन
एतेक बड़का अन्याय
ई त' छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेषसँ भरल
लोकसभ कयने छथि हमरा संगे अनुचित न्याय।

•

जीबैत जा रहल छी

शब्द अहाँक बड़ विषवाण अछि प्रिया
तीर हीयामे लागल मरैत जा रहल छी

जानि नहि कोन पखमे जुड़ल अपन सिनेह
नेह जहियासँ लागल बताहे बुझाइत छी

प्रेम कहियो ने बुझलहुँ सदति करैत प्रेम
आब घृणासँ जिनगी जीबैत जा रहल छी

मान आ सम्मानकेँ रखने छी ताखपर
पसीखानामे हम ताड़ी पीबैत जा रहल छी

एम्हरो छैक अन्हारे, ओम्हरो नहि इजोत
इजोत लेल अन्हारमे बढ़ैत जा रहल छी

हीत अछि कि शत्रु, नहि ककरोपर भरोस
पहाड़ सन जिनगी उघैत जा रहल छी।

•

हमरा गामक बूढ़-पुरनिआ पंच

स्वर्गवासी भ' गेलाह
हमरा गामक पाँचो बूढ़-पुरनिआ पंच
आइ अचाँचके मोन भेल
जे एगो कविता लिखिक' करी
हुनका सभक सम्मान

श्रद्धेय स्व. सुरैल लाल यादव
स्व. मुंगेलाल साह, स्व. गंगा प्रसाद यादव
स्व. असरफी महतो, स्व. राममुनी घटवार
दूधकेँ दूध आ पानिकेँ पानि जकाँ
करैत देखने छियैक हम हुनका सभक न्याय

पाँचो रहथिन हमरा गामक सम्मानित किसान
मुदा हुनका सभमे हम कहियो नहि देखने रहियै
धन-सम्पदा आ कि मान-सम्मानक अभिमान
पाँचो वैष्णव, गृहस्थ आश्रमक संत
चाहे सामाजिक उत्सव होइक
आ कि समाजमे कोनो दुखद घटना घटैक
पहुँचैत छलाह एकदमसँ तुरन्त

सभक छलनि सात्विक विचार
गामक सभ गोटे कमाइ-खाइ
सभक बाल-बुतरू पोसाय
सभकियो अपन बाल-बच्चाकेँ पढ़बथि-लिखबथि
गामक लोकसभ झगड़ा-लड़ाइसँ अलगे रहि
शान्तिसँ अपन जिनगी बितबथि
पंच-परमेश्वरक सभ गुण छलनि

हुनका सभमे
धर्मसँ बेसी मनुष्यता रखैत छलाह संगमे
अपना जीबैतमे ओ सभ गाममे
नहि आबय देबय चाहलखिन कहियो पुलिस
हुनकर सभक प्रयास रहैत छलनि
जे गामबला केस-फौदारीकेँ अनावश्यक
खर्चासँ रहथि दूर

आह! कतेक नीक छलाह ओ बूढ़-पुरनिआ लोक
वेद-ग्रंथ सभ जनितहु
नहि रखैत छलाह ऊँच-नीच, छूआ-छूत
आ कि जातीयताक बोध
बरु मरि गेलाह ओ सभ
चलि गेलाह मृत्यु धाम
मुदा अपन यश आ सुकृतिसँ
एखनो जीबैत छथि हमरा
आ हमरा गामक लोकक स्मृतिमे
हम ओहि पुण्यात्मा सभकेँ करैत छियनि
करबद्ध प्रणाम।

•

हम छी दलित साहित्यकार

हम स्वीकारैत छी
पुरस्कार सम्मानक लोभमे
भोथ भ' गेल अछि हमर कलम
आ संकुचित भ' गेल अछि हमर विचार
हम नहि क' रहल छी
अपना आर अपना समाजसँ न्याय
हम नहि सुनि रहल छी
अपन अन्तरात्माक आवाज
आर नहि खुलि क' लिख पाबैत छी
अपन हक अधिकारक बात
जखन कि हमरा बुझना अछि
अपन संत्रासित इतिहास
अदौ कालसँ भोगल
सभ दुख, व्यथा, संताप
हम खूब नीकसँ उठा सकैत छलहुँ
दलित दमित शोषित वंचितक आवाज

मुदा हमरा डर अछि
जे पैघ साहित्यकार आर पुरस्कार देनिहार लोकनि सभ
भ' जेता नाराज
किए कि हमरा आ हुनकर विचारमे
छत्तीसक भिन्नता छन्हि
हम जाहि विषयक विरोध कर' चाहैत छी
हमरा नहि चाहितो हुनकर निन्दा छनि
फेर हमरा नहि मिलत मंच आ नहि मिलत पाग
ओ हमरा दलित साहित्यकार समझि
अपना समाजसँ क' देता एक कात

हमरा पर दोषारोपण करताह
जे हम हीन भावनाक भ' गेल छी शिकार
हम प्रतिक्रियावादी बनि किएक नहि रहलहुँ
हुनकर मानसिक चाकरी किएक नहि कयलहुँ स्वीकार

कहू त' भला ई कतेक संकीर्ण भावना छैक
जाहि भाषामे साहित्यकार खुलि क' अपन बात
नहि राखि सकैछ
ओहि भाषा आर साहित्यिक विकास लेल कतेक भारी
विडम्बना छैक?
स्वार्थ लिप्सामे हमर नैतिक पतन भ' रहल अछि
हमर आत्मस्वाभिमानक हनन भ' रहल अछि
हम साहित्यिक धर्मसँ विमुख भ'
बनि गेल छी चाटुकार
फेर हम कथीक साहित्यकार?

नहि, कदापि नहि
नहि अछि स्वीकार हमरा कोनो तरहक गुलामी
हम आइ धरि रहलहुँ आत्मस्वाभिमानी
आइ हम मोने-मोने शपथ खाइत छी
आब हम निर्भीक आर स्वतंत्र लिखब
पुरस्कार सम्मान मिलय आकि नहि मिलय
मुदा अपन लिखबसँ
लोकक हीयामे अबस्स बसब।

•

जनता नहि जानि रहल छैक

लोकतंत्रक बोझा बन्हने
संविधानकेँ धाँगि रहल छैक
जाति-धर्मक धुजा उठौने
देशभक्ति गीत गाबि रहल छैक
संसदकेँ देखियौ ने आइ-काल्हि
घृणा-उन्माद खूब बाँटि रहल छैक

गृहयुद्ध सन स्थिति छैक देशक
से जनता नहि जानि रहल छैक
किछु अगिलेसुआ नेताकेँ सुनिक'
ओकरे ताले नाचि रहल छैक
एकर सभक किरदानी देखिकेँ
भारत माता कानि रहल छैक

वंदे मातरम्
भारत माता की जय
एही दू पाँतिपर
देशभक्तिक प्रमाण-पत्र बाँटि रहल छैक
एकर बुद्धि देखियौ देश आ धर्मकेँ
एकहि लाठीसँ हाँकि रहल छैक
ई केहन लोकतंत्र छैक भाइ यौ
विरोधीकेँ देशद्रोही कहिक' फाँसि रहल छैक

रोजी-रोजगार, सकल घरेलू उत्पादपर
बकार हरण कयने ताकि रहल छैक
हिन्दू-मुसलमान आ पाकिस्तानकेँ भरि दिन
देशक मीडियामे बाँचि रहल छैक

अन्धराष्ट्रवादक जाल बिछौने
जनता सभकेँ फाँसि रहल छैक

नहि सुनैत छैक ककरो बात ओ
अर्थनीतियोपर शेखी बघारि रहल छैक
सभ सरकारी संस्थानकेँ देखियौ
पूँजीपतिमे बाँटि रहल छैक
ई केहन विकास छैक भाइ यौ
चाकरीबला सभकेँ छाँटि रहल छैक

बहुरूपिया जकाँ भेष बदलि ओ
फुसियौका गप खूब हाँकि रहल छैक
पूजैत छैक ओ गाँधीकेँ
मुदा गोडसेकेँ मानि रहल छैक
खन चौकीदार, खन फकीर ओ
एकर स्वांग नहि जनता जानि रहल छैक!

•

ओकरा नहि छैक ज्ञान

(दिल्ली दंगा)

किछु नहि ज्ञान छैक ओकरा
जाहिपर ओ क' सकैछ अभिमान
ने धर्म, ने विज्ञान, ने इतिहास, ने संविधान
ने सीरिया, ने पाकिस्तान
ओ त' मजूर छैक बेचारा
ओ नहि बुझैत छैक कि होइत छैक
हिन्नू आ कि मुसलमान
कथी छैक गीता आ कथी छैक कुरान
ओ मस्जिद देखैत छैक त' सजदा क' लैत छैक
आ मन्दिर देखिक' प्रणाम
हँ, ओ मजूर छैक, बिनु पढ़ल-लिखल
ओकरा नहि छैक कोनो ज्ञान
मुदा आब ओकरा गुरु मिलि गेलैए
कपिल मिश्रा आ वारिस पठान
खूब नीकसँ ओकरा पढ़ा देलक
अपन धर्म आ मजहब
द' देलक राजनीतिक सेहो किछु ज्ञान
आब ओ अपनाकेँ मजूर नहि मानैत छैक
ओकरा घमण्ड भ' गेल छैक जे हम छी बड़का विद्वान
आ एहि मादे चलि पड़ल छैक ओ
हाथमे पिजेलहा तरुआरि लेने
मनुक्खक शोणितसँ करय स्नान
एहन विद्वानकेँ नहि रहैत छैक ज्ञान
की साम्प्रदायिक दंगामे नहि मरैत छैक कोनो नेता
मरैत छैक त' आम आदमी
आ कि आम आदमीक बेटा! •

मनुक्खता

अन्हार जकाँ बुझना जाइत अछि चारूभर
प्रकृति, परिवेश, सभ्यता आ संस्कृति
एतबा नहि, ई धरती, ई सृष्टि
सभ बुझना जाइत अछि अन्हार मसान
के मुरुख, के विद्वान
सभकियो जाति-पाति, धर्म-मजहबक दम्भमे
एकहि समान

बदलल-बदलल सन बुझना जाइत अछि सभक प्रवृत्ति
धर्म आब शान्ति-सौहार्द्र-सद्भावना नहि
घृणा आ विध्वंस बाँटि रहल अछि
सत्ता आब जनकल्याणक काज नहि
दमन आ षडयंत्र क' रहल अछि
अन्धविकासक पहिया जानि ने कत' गुड़कएने
ल' जा रहल अछि एहि दुनियाकेँ
हिंसा आ उन्मादक बिर्रो नहि जानि
कत' उड़ौने जा रहल अछि मनुष्यताकेँ

दुनियाक सभ देश लग छैक
कमोबेस विध्वंसक हथियार
जे कखनहुँ क' सकैछ एहि सृष्टिक संहार
जेना तरुआरिक नोकपर ठाढ़ अछि ई पृथ्वी
जेना किम जोंग, डोनाल्ड ट्रंप
आ ओकरे सन तागतिगर लोकक
दयामात्रसँ बाँचल अछि ई सृष्टि
भविष्यक चिन्तासँ कवि मोन व्याकुल भ' रहल अछि
बारुदक गन्धसँ जेना सौंसे प्रकृति

आ परिवेश महकि रहल अछि
देश आ धर्म जाँतक दूगो पाट बनल
पिसने जा रहल अछि शान्ति आ अहिंसा
सीरिया आ पाकिस्तान जेहादक बहन्ने
आतंकी परसि रहल अछि
त' इजरायल आ अमेरिका अपन सुरक्षाक नामपर
बमगोला पटकि रहल अछि
आ दुनियाकेँ सत्त आ अहिंसाक पाठ पढ़ौनिहार
अपन देश भारत साम्प्रदायिकताक हाकरोस क' रहल अछि

अपनहिँ हाथसँ अपन अस्तित्वक
विनाश करबामे लागल अछि ई स्वार्थी समाज
प्रकृति-पर्यावरणकेँ सेहो एकदमसँ
दूहि लेबय चाहैत छैक अपनहिँ जिनगीमे
किछु नहि छोड़य चाहैत छैक अगिला पीढ़ीक लेल
ने जंगल, ने पहाड़
ने शुद्ध पानि, ने स्वच्छ बसात
माहुर पीबय लेल अभिशप्त कयने जा रहल छैक
अपनहिँ वंशक धिया-पुताकेँ
की एहने होइत छैक सभ्यताक विकास

हँ, एखनहुँ,
एखनहुँ बाँचल अछि एगो आस
एहि विकट परिस्थितिसँ उबारि सकैछ मनुष्यता
से अछि हमरा दृढ़ विश्वास
आ एहि मादे हम चलि पड़ल छी
सत्त-न्याय-अहिंसाक रस्ता
हमरा बुझल अछि
जे देश-धर्मसँ पैघ होइत छैक मनुष्यता

आग्रह अछि जे सभकियो मनुष्यता अपनाउ
अपन स्वार्थ छोड़ि एहि सृष्टिकेँ बचाउ
नहि त' प्राचीन सभ्यता
(मिस्र, मेसोपोटामिया आ सिन्धुघाटी सभ्यता)
जकाँ विध्वंस भ' सकैछ ई वर्त्तमान सभ्यता
मनुक्खक लहासक ढेरीपर बैसि
भभा-भभा हँसैत रहि जायत
अन्धविकास, अन्धराष्ट्रवाद आ धर्मक उन्मान्दता।

•

रे मन, होइत छें कियैक उदास

रे मन, होइत छें कियैक उदास
अपनासँ कनै पाछुओ देखही
बहुत लोक हतास
रे मन, होइत छें कियैक उदास

ई सभ छैक कर्मक खेल
तोहूँ कर प्रयास
भाग्य बदलतौ नीक कर्मसँ
जुनि कर दोसराक आस
रे मन, होइत छें कियैक उदास

सुख-दुख जिनगीमे अबैत रहैत छैक
कर जे छौक तोहर काज
साधन-संसाधन किछु नहि होइत छैक
जँ अपना पर छौक विश्वास
रे मन, होइत छें कियैक उदास

हमहुँ मनुक्ख छी जँ तोँ सोचि लें
छूबि सकैत छें अकास
कठिन परिश्रम सदति करैत रह
मेहनति नहि होइत छैक खराब
रे मन, होइत छें कियैक उदास

सफलता-असफलता त' लगले रहैत छैक
कर्मसँ नहि हो एक कात
एक दिन सफलता अबस्से मिलतौ
जँ सत्य छौक तोहर प्रयास

रे मन, होइत छें कियैक उदास

ई जिनगीक मूल मंत्र छैक
क’ ले तोँ स्वीकार
नित दिन एतय नव प्रतियोगिता
आगाँ बलाकेँ पछार
रे मन, होइत छें कियैक उदास।

•

विकास

गरीबी अपनेकेँ नहि अछि बुझल
एकबेर चलियौ अपने, चलियौ हमरा गाममे

ए.सी.मे बैसिक' विकास नहि देखायत हुजूर
विकास पढ़ौनी छोड़ि चुकल अछि, अपना बापक कम कमाइमे

सभक साथ सभक विकास, चलू अहाँकेँ देखबैत छी
कतेको विकास मरि रहल छैक अभावे दबाइमे

अहाँक विकास हुजूर, अहाँक घोषणा-पत्रमे अछि चमकि रहल
हमर गामबला विकास जरि रहल अछि जठराग्निक पसाहीमे

विकासक सच्चाइ हुजूर, देशक सभ गाममे छैक
हमरा नहि ओझराउ अहाँ, कागजक गहिंराइमे।

•

हम की लिखू

हम की लिखू
जन-मजूरक दुख-व्यथा लिखू
की किसानक दुर्दशा लिखू
भीड़क हिंसा लिखू
की दलित उत्पीड़नक खिस्सा लिखू
हम की लिखू

धर्म-मजहबमे जंग लिखू
की जाति-पातिक द्वंद लिखू
सत्ताक षड़यंत्र लिखू
की वर्ग-संघर्ष लिखू
हम की लिखू

नेता सभक गिरल चरित्र लिखू
की जनता सभ छैक त्रस्त लिखू
अपहरण-बलात्कार लिखू
की राजनीतिक भ्रष्टाचार लिखू
की लिखू हम

करोनाक महामारी लिखू
की लॉकडाउनक फिरिसानी लिखू
बढ़ल बेरोजगारी लिखू
की खेल चोर-चौकीदारी लिखू
हम की लिखू

बड़ मसकिलमे पड़ल छी हम

अपन मोनक कुंठा लिखू
की अपन आत्ममुग्धता लिखू
हमरा किछु नहि फुराइत अछि
जखने कलम-कागज उठबैत छी
देशमे समस्याक अंबार देखाइत अछि
मुदा लिखब हम, जरूर लिखब
आमजनक दुख-व्यथासँ
भरल इनकिलाबक कविता
जे जन-जनकेँ
सदति प्रेरित करैत रहतैक
देशक उत्थानमे लेबय लेल हिस्सा।

•

मुक्तिबोधक ब्रह्मराक्षस

एखनहुँ मिलि जायत कतेको
मुक्तिबोधक ब्रह्मराक्षस
धर्म, समाज, राजनीति, विज्ञान
सभ विषयक प्रकाण्ड विद्वान

गाम-समाजसँ अलगहि
आमजनसँ दूरहि
अपना कुल-खानदानक घमंडमे
अपना विद्वताक दंभमे
एकदमसँ एसगरहिं

अति आत्मस्वाभिमानक जालमे ओझरायल
अरस्तुक अनुसार स्वयंकेँ मानैत भगवान
जखन कि ओ मनुष्यतासँ शून्य भ'
बनि जाइत छथि दानव
आ ताहि मादे
हुनका नहि बुझल रहैत छनि
जे अंहकारसँ नाश भ' जाइत छैक ज्ञान
किंवा व्यवहारिक ज्ञान बिनु
निरर्थक भ' जाइत छैक शास्त्र-ज्ञान

'नहि उधो के लेना, नहि माधो के देना'
यैह होइत अछि हुनकर सिद्धांत
सिद्धांत जे ओतेक ज्ञान रहितो
हुनका बना दैत छनि
लोकक घृणाक पात्र
आ ओ मरि जाइत छथि
अहंकारक अन्हारमे
नितांत एकांतमे। •

जग भरिमे अछि त्राहिमाम् मचल

जगभरिमे अछि त्राहिमाम् मचल
आब जगकेँ के बचाओत यौ
की राम जनम लेताह फेरसँ
आ कि अर्जुन आबि गाण्डिव उठाओत यौ

घर-घर हिंसा, घृणा-उन्मादसँ
की गाँधी आबि अहिंसा सिखाओत यौ
आ कि फेरसँ कियो बुद्ध आबिक'
शांति केर पाठ पढ़ाओत यौ

कर्त्तव्यपथ सँ भटकल जनकेँ
की श्रीकृष्ण आबि गीता सुनाओत यौ
आकि फेर सँ कियो विवेकानंद आबिकेँ
कर्त्तव्य बोध कराओत यौ

धर्मक कटुता बढ़ले जाइत अछि
की कबीर आबि सद्भावक धर्म बनाओत यौ
आ कि आबि गुरु नानकदेवजी
घर-घर गुरुवाणी सुनाओत यौ

गरीब-गुरबाक दुख-दरद कहय लेल
की जनकवि यात्री आओत यौ
आ कि होरी-धनियाक व्यथा केँ
कियो आर प्रेमचंद लिखि पाओत यौ

देशभक्तिक गीत गाबय
की दिनकर फेरसँ आओत यौ
आ कि वीर भगत सिंह आबिक'
रंग दे बसंती गाओत यौ। •

लॉकडाउन

औनाय लगैत अछि हमर मोनक असंख्य आखर
लिखय लेल व्याकुल भ' जाइत अछि मोन
मुदा दुख-दरद एतेक
कि शब्द चित्रण नहि क' पबैत छी हम

एहि लॉकडाउनमे
जखन रेलक पटरीपर काज करैत
हजारक हजार मजूरकेँ
बैसाखक लहलहाइत दुपहरियामे
रेलक पटरीक बीच
भूखल-पिआसल गिट्टी आ पाथरपर
चलैत देखैत छलहुँ हम
त' नित्तह मोने-मोन संकल्प लैत छलहुँ
कि आइ डेरापर जाक'
हिनका सभक दुख-तकलीफकेँ लिखब हम
मुदा कलम-कागज पकड़िते हम डूबि जाइत छलहुँ
हुनका सभक दुखक अथाह सागरमे
फेर जल्दी नहि निकलि पबैत छलहुँ हम

हमर कविक कल्पना, मानवीय सम्वेदना
अन्तःकरणक वेदना
सभ भ' जाइत छल बेकार
कियैक त' हुनका सभक
थाकल-ठेहियायल देह
ताहिपर दू-तीनटा बैग
फूलल छाबा, फोकामे भेल पैरसँ

नेंगराइत उठबैत नहुँ-नहुँ डेग
हमर अंतरात्माकेँ झकझोरि दैत छल
हमर एकाग्रताकेँ तोड़ि दैत छल
फेर हम हुनका सभक भोगल दुखकेँ नहि लिख पबैत छलहुँ
आध-छिदहा लिखल पन्ना फाड़ि दैत छलहुँ बेर-बेर
जखन हम आत्मसंतुष्ट नहि भ' पबैत छलहुँ

मुदा लिखब, जरूर लिखब हम
आँखिसँ देखल हुनका सभक दुख-तकलीफकेँ
आ सरकारक दुरंगा चरित्रकेँ
हम लिखब जे लॉकडाउनमे
भारतक भाग्यक निर्माता सभ भूखल-पियासल
हजारक हजार कोस चलिते-चलिते
मरि रहल छलैक
आ करोनासँ भरल जहाज
तखनो भारतमे उतरि रहल छलैक!

•

अन्हारसँ डर नहि लगैत अछि

अन्हारसँ डर नहि लगैत अछि हमरा
इजोते जेना भयाओन बुझना जाइत अछि
दुश्मनक आघात त' सहिते छी सभ दिन
मुदा मीतक विश्वासघातसँ हीया व्याकुल भ' जाइत अछि

जिनगीक एकटा दाव-पेंच नहि सिखलहुँ हम
बिनु छल प्रपंच जिनगी अधुरे बुझना जाइत अछि
अनेरो लोक बदनाम क' दैत अछि हमरा समाजमे
लोकक चालि-चलनि देखिकेँ हमरा किछु नहि फुराइत अछि

दोख एतबे अछि जे क' लैत छी सभसँ हँसिक' गप
हमरा अधलाहो लोक जेना नीके बुझना जाइत अछि
ओह! लोक एतेक खसि पड़ैत छैक स्वार्थमे
से ठेस लगलाक पछाति देखाइत अछि

दरद हीयाके 'रामकृष्ण' ककरासँ कहत
जकरे बुझैत छी अपन, पराया भ' जाइत अछि
छी मनुक्ख त' राखब हीयामे मनुक्खे केर भाव
ई सकंल्प जेना हमर आत्मसम्बल बनि जाइत अछि।

•

तों बेजोड़ छें रौ बौआ

जीतक स्वाद बड़ अनमोल छै रे बौआ
अपन परिश्रमसँ मिलल सफलताकेँ
नहि कोनो मोल छैक रे बौआ
जीत निश्चित हेतौ, राख मोनमे विश्वास
सदिखन इमानदारीसँ बौआ करैत जो प्रयास

तोहर जोड़ आर कियो नहि, तों बेजोड़ छें रे बौआ
अपन अन्तरमनकेँ निहार, नहि कमजोर छें रौ बौआ
हारि जुनि, तों मान, अपन लक्ष्यपर दे धियान
मोनमे ठानि लेलापर बौआ सभकिछु छैक आसान

तों अपना कुल-खनदानक इजोत छें रौ बौआ
तों अपना माय-बापक भरोस छें रौ बौआ
सभ लगौने छौ आस, लिख नव इतिहास
कर्म एहन कर बौआ लोक सदति राखौ याद।

•

जिनगीक उद्देश्य

जँ जिनगी अछि त' जीबाक उद्देश्य होयबाक चाही
झूठ-फूइसक गपक विरोध होयबाक चाही
सदिखन जी-हुजूरी ठीक नहि छैक भाइ
आत्मसम्मानक लेल किछु त' गर्व जरूर होयबाक चाही

कियो नहि पूछैत अछि अहाँकेँ त' नहि कोनो बात
स्वयंकेँ साबित करबाक हुनर जरूर होयबाक चाही
लोकक आदति छैक खींचत टाँग पकड़िकेँ भाइ
लक्ष्य धरि पहुँचय लेल ताकति जरूर होयबाक चाही

काज एहन करू कि कियो झाँपि नहि सकय
अहाँक काजमे ओ सुर्जक इजोत होयबाक चाही
बिनु कयने नहि होइत छैक ककरो जय-जयकार
किछु करी प्रयत्न मुदा पुरजोर होयबाक चाही।

•

दू पटरीक बीच